बृहस्पतिवार
34 साल से देहरादून का विश्वास
27 अगस्त 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 215
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com
Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

पति ने की पत्नी की हत्या, गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। मामूली विवाद में पति ने पत्नी की गला रेतकर हत्या कर दी। महिला की हत्या से क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारी भी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर हत्यारोपी को गिरफ्तार कर लिया। समाचार लिखे जाने तक हत्या के सही कारणों का पता नहीं चल सका है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आज दोपहर पुलिस कंट्रोल रूम से डालनवाला कोतवाली पुलिस को सूचना मिली कि मोहिनी रोड में किसी महिला की हत्या कर दी गयी है। हत्या की सूचना पर पुलिस विभाग में हडकम्प मच गया। सूचना मिलते एसपी सिटी प्रमोद कुमार, डालनवाला कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचे।

पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और आसपास के लोगों से पूछताछ की तो पता चला कि मोहिनी रोड निवासी रामजी लाल व उसकी पत्नी सोनू पाल यहां पर रहते हैं। सोनू लोगों के घरों झाड़ू पोंछा लगाने का काम करती थी तथा रामजी लाल राजमिस्त्री का काम करता है। पुलिस के अनुसार सोनू व रामजी लाल में किसी बात को लेकर रोज विवाद रहता था। आज प्रातः ग्यारह बजे के आसपास रामजी लाल घर पर ही था तथा उसकी पत्नी लोगों के यहां काम करने के लिए चली गयी।

लगभग ग्यारह बजे के बाद सोनू घर आयी तो किसी बात को लेकर पति पत्नी में फिर विवाद शुरू हो गया। विवाद बढता देख रामजी लाल अपना आपा खो बैठा और उसने पाठल से पत्नी सोनू का गला रेत दिया। जिससे वह वहीं तडफने लगी।

आसपास के लोग उसकी चीख पुकार सुनकर वहां आये और उसको उठाकर अस्पताल ले जाने की तैयारी करने लगे लेकिन तब तक उसकी मौत हो गयी थी। जिसके बाद आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच रामजी लाल को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने तत्काल फोरेंसिक टीम को सूचना दी। सूचना मिलते ही फोरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंच साक्ष्य एकत्रित करने लगी।

नेपाल जलप्रलयः 175 शव बरामद, 750 लोग लापता!

संवाददाता

काठमांडू। नेपाल में बिना किसी पूर्व चेतावनी या भारी बारिश के, अचानक आई विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन ने तीन जिलों में तबाही का ऐसा मंजर बिछाया, जिसने हाल के वर्षों की सबसे भयानक मानवीय त्रासदियों में से एक का रूप ले लिया है।

नेपाली पुलिस और पीएमओ के आंकड़ों के अनुसार, इस तबाही में समाचार लिखे जाने तक 175 लोगों के शव बरामद किए जा चुके हैं, जबकि 750 से अधिक लोग अब भी लापता हैं। लापता लोगों में नेपाल के आम नागरिकों के अलावा 391 विदेशी पर्यटक, 133 भारतीय नागरिक और 44 सुरक्षाकर्मी भी शामिल हैं। नेपाली समाचार पत्र द काठमांडू पोस्ट के अनुसार, उफनती भोटे कोशी नदी और ल्हेंडे नदी के पानी ने इंसानों के साथ-साथ बस्तियों, पुलों और गाड़ियों को ताश के पत्तों की तरह बहा दिया।

बुधवार सुबह जब सीमावर्ती इलाकों में लोग व्यस्त थे, तभी अचानक नदी का जलस्तर विकराल रूप ले चुका था। इलाके में बारिश नहीं हो रही थी, इसलिए किसी भी स्तर पर खतरे का सायरन नहीं बजा और न ही लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने का मौका मिला।

चीन सीमा के पास स्थित रसुवागढ़ी, तिमुरे और स्याफ्रुबेसी जैसी घनी आबादी वाली बस्तियां पानी के इस तेज बहाव की चपेट में सबसे पहले आईं। पानी के साथ भारी मात्रा में बहकर आए मलबे ने एक ही झटके में इमारतों को ध्वस्त कर दिया।

बाढ़ की विनाशलीला ने नेपाल की रीढ़ माने जाने वाले बुनियादी ढांचे को भी गहरा जख्म दिया है। शुरुआती आकलन के मुताबिक, देश की 9 जलविद्युत (हाइड्रोपावर) परियोजनाएं इस मलबे में समाकर पूरी तरह नष्ट हो गई हैं। व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र रहीं 9 बैंकों की शाखाएं पूरी तरह बह गई हैं। इसके अलावा, यातायात के जीवन सूत्र माने जाने वाले 19 बड़े मोटर योग्य पुल और करीब 40 किलोमीटर लंबी सड़कें पूरी तरह कट चुकी हैं, जिससे दूरदराज के इलाकों में राहत दल का पहुंचना भी मुश्किल हो रहा है।

पड़ोसी देश पर आए इस बड़े संकट के बीच भारत ने तुरंत संवेदनशीलता दिखाते हुए राहत और बचाव कार्यों की कमान संभाली है। भारतीय वायुसेना का विशेष ब-130श्र विमान 10 टन आवश्यक मानवीय सहायता और मेडिकल राहत सामग्री लेकर काठमांडू पहुंच चुका है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर जानकारी देते हुए कहा कि भारत इस कठिन घड़ी में नेपाल के साथ मुस्तैदी से खड़ा है। इस फ्लैश फ्लड का मुख्य कारण कोई मानसूनी बारिश नहीं, बल्कि उच्च हिमाच्छादित क्षेत्र में हुई एक गंभीर भौगोलिक घटना है। प्लैनेट लैब्स की सैटेलाइट तस्वीरों से प्राथमिक जानकारी मिली है कि नेपाल-चीन सीमा के करीब 20 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में एक बड़ा बर्फीला भूस्खलन (आइस एंड रॉक एवलांच) हुआ।

इस भूस्खलन से चट्टानों और बर्फ के बड़े हिस्से ने ल्हेंडे नदी का रास्ता रोक दिया, जिससे एक अस्थायी मलबे की झील (डैम) बन गई।

दून वैली मेल

संपादकीय

आपदा की पटकथा

नेपाल में आई जल प्रलय ने एक बार फिर हिमालय की उस बेचैनी को सामने ला दिया है, जिसे हम अक्सर प्राकृतिक आपदा कहकर अपनी जिम्मेदारी से बच निकलते हैं। नदियों का उफान, बाढ़, भूस्खलन और तबाही की तस्वीरें केवल नेपाल की त्रासदी नहीं हैं। हिमालय की पूरी पट्टी नेपाल से लेकर उत्तराखंड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर तक एक ही भौगोलिक और पर्यावरणीय संकट से गुजर रही है। सवाल यह नहीं है कि इस बार पानी इतना ज्यादा क्यों आया। बड़ा सवाल यह है कि हमने पहाड़ों को पानी संभालने की क्षमता से वंचित क्यों कर दिया? नेपाल की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि मानसून की भारी बारिश का असर वहां तेजी से दिखाई देता है। पहाड़ों में ढलानों पर बढ़ता निर्माण, जंगलों का दबाव, नदी-तंत्र के साथ छेड़छाड़ और बदलता मौसम इस खतरे को और बढ़ा रहे हैं। जब पहाड़ बारिश का पानी सोख नहीं पाते तो वही पानी कुछ घंटों में विनाशकारी धारा बन जाता है। नदी अपना रास्ता नहीं बदलती, हम उसके रास्ते में निर्माण कर देते हैं और फिर बाढ़ आने पर प्रकृति को दोष देने लगते हैं। हिमालय को केवल पर्यटन और जलविद्युत की मशीन समझने की भूल अब भारी पड़ रही है। पहाड़ की अपनी एक पारिस्थितिकी है। यहां सड़क काटने से लेकर सुरंग बनाने तक और नदी किनारे बस्तियां बसाने से लेकर बड़े निर्माण प्रोजेक्ट खड़े करने तक हर गतिविधि का असर नीचे तक जाता है। विकास जरूरी है, लेकिन ऐसा विकास जो पहाड़ की क्षमता को समझे। यदि विकास का अर्थ पहाड़ की ढलानों को कमजोर करना, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को रोकना और जंगलों को कम करना है तो वह विकास नहीं, भविष्य की आपदा की पटकथा है। नेपाल की त्रासदी भारत के लिए भी सीधा संदेश है। उत्तराखंड में हर मानसून के दौरान भूस्खलन, सड़क धंसने, नदियों के उफान और बादल फटने की घटनाएं बढ़ती दिखाई देती हैं। चारधाम यात्रा मार्गों से लेकर सीमावर्ती क्षेत्रों तक पहाड़ की संवेदनशीलता सामने आती रहती है। इसके बावजूद हमारी विकास नीति में आपदा से पहले की तैयारी से ज्यादा जोर आपदा के बाद राहत और मुआवजे पर दिखाई देता है। हेलीकाप्टर भेजना, सड़क खोलना और राहत पैकेज घोषित करना जरूरी है, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं है। जरूरत इस बात की है कि हिमालयी देशों के बीच आपदा प्रबंधन को लेकर साझा रणनीति बने। नेपाल और भारत की नदियां सीमाओं को नहीं मानतीं। एक देश में हुई भारी बारिश का असर दूसरे देश तक पहुंच सकता है। इसलिए नदी घाटियों को राजनीतिक सीमाओं के बजाय प्राकृतिक इकाई मानकर काम करने की जरूरत है। मौसम पूर्वानुमान, बाढ़ की चेतावनी, जलस्तर की सूचनाएं और आपदा संबंधी डेटा दोनों देशों के बीच समय पर साझा होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पहाड़ की आवाज को विकास की बहस में जगह मिले। स्थानीय लोगों से पूछे बिना पहाड़ का भविष्य तय नहीं किया जा सकता। जिस व्यक्ति ने पीढ़ियों से उस भूगोल को देखा है, उसकी चेतावनी किसी फाइल में बैठे विशेषज्ञ की रिपोर्ट से कम महत्वपूर्ण नहीं हो सकती। स्थानीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का मेल ही हिमालय को सुरक्षित रखने का रास्ता दिखा सकता है। जलवायु परिवर्तन ने खतरे को और गंभीर बना दिया है। बारिश का स्वरूप बदल रहा है। लंबे समय तक सूखा और फिर अचानक अत्यधिक बारिश जैसी स्थितियां सामने आ रही हैं। ऐसे में पुराने आंकड़ों और पुराने आपदा मानचित्रों के आधार पर भविष्य की योजना बनाना पर्याप्त नहीं होगा। हमें बदलते मौसम के हिसाब से नए जोखिम मानचित्र बनाने होंगे। नेपाल की जल प्रलय को कुछ दिनों की खबर बनाकर भूल जाना आसान है। लेकिन हिमालय हमें बार-बार चेतावनी दे रहा है। सवाल यह है कि हम हर बार तबाही के बाद जागेंगे या तबाही से पहले अपनी नीतियां बदलेंगे? प्रकृति विकास की विरोधी नहीं है। प्रकृति केवल इतना चाहती है कि विकास उसकी सीमाओं को समझकर किया जाए। हिमालय को जीतने की कोशिश जितनी जल्दी बंद होगी, उतनी ही जल्दी उसे बचाने की शुरुआत होगी। नेपाल की त्रासदी को इसलिए केवल पड़ोसी देश की आपदा मानना भूल होगी। यह पूरे हिमालय की चेतावनी है पहाड़ को बचाइए, वरना पहाड़ की तबाही मैदानों तक पहुंचेगी।

दिवंगत बालम सिंह राणा के पार्थिव शरीर को पूरे राजकीय सम्मान के साथ दी अंतिम विदाई

संवाददाता

देहरादून। जनपद देहरादून में नियुक्त मुख्य आरक्षी बालम सिंह राणा का हृदयघात से आकस्मिक निधन हो गया। दिवंगत बालम सिंह राणा के पार्थिव शरीर को आज पुलिस लाइन देहरादून में पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम सलामी दी गयी। इस दौरान एसएसपी देहरादून व अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा दिवंगत बालम सिंह राणा के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। एसएसपी देहरादून द्वारा बालम सिंह राणा के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए दुख की इस घडी में शोक संतृप्त परिवार को धैर्य व शक्ति प्रदान करने के लिये ईश्वर से कामना की तथा उनके के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया। दिवंगत बालम सिंह राणा मूल रूप से जनपद उत्तरकाशी के रहने वाले थे तथा वर्तमान समय में रायपुर में परिवार सहित निवासरत थे।

45 मिनट की 'खामोशी' पर सवाल

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद अब तबाही के पानी के साथ एक और सवाल बहकर सामने आया है क्या इस त्रासदी को कुछ हद तक टाला जा सकता था? सवाल सीधे चीन की ओर उठ रहे हैं। नेपाली मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, तिब्बत के केरुंग क्षेत्र में बाढ़ आने और नेपाल को इसकी जानकारी मिलने के बीच करीब 45 मिनट का अंतर रहा। यही 45 मिनट अब नेपाल में बहस का केंद्र बन गए हैं। रिपोर्टों के अनुसार, चीन के तिब्बती क्षेत्र केरुंग काउंटी में स्थानीय समयानुसार सुबह करीब 10:30 बजे बाढ़ की स्थिति सामने आई। नेपाल और चीन के समय में 2 घंटे 15 मिनट का अंतर है। इस हिसाब से घटना नेपाल के समयानुसार करीब 8:15 बजे की बताई जा रही है, जबकि नेपाली प्रशासन को लगभग 9 बजे के आसपास इसकी जानकारी मिलने का दावा किया गया है। यानी सवाल सिर्फ 45 मिनट का नहीं है। सवाल यह है कि सीमा के उस पार पैदा हुई आपदा की सूचना सीमा के इस पार रहने वाले लोगों तक कितनी जल्दी पहुंचनी चाहिए थी।

आपदा के समय 45 मिनट सामान्य समय नहीं होते। नदी किनारे रहने वाले लोगों को हटाने, बाजार बंद कराने, पुलों और संवेदनशील रास्तों पर आवाजाही रोकने तथा सुरक्षाबलों को अलर्ट करने के लिए यही समय बेहद महत्वपूर्ण हो सकता है।

◆नेपाली प्रशासन को आपदा की पहली सूचना करीब 9: 00 बजे मिली
◆यही 45 मिनट का फासला अब नेपाल में तीखे विवाद का केंद्र भी बना
◆सवाल मिनटों का नहीं, अर्ली वार्निंग सिस्टम की पारदर्शिता व रफ्तार का

यह कहना अभी जल्दबाजी होगी कि अगर 45 मिनट पहले चेतावनी मिल जाती तो कितनी जानें निश्चित रूप से बच जातीं। लेकिन इतना जरूर है कि समय रहते चेतावनी मिलने से एहतियाती कदम उठाने का अवसर बढ़ता। नेपाली अधिकारियों और रिपोर्टों में इसी को लेकर सवाल उठ रहे हैं और यही वह बिंदु है जहां प्राकृतिक आपदा एक कूटनीतिक सवाल में बदल जाती है।

नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में आई बाढ़ ने रसुवा, नुवाकोट और आसपास के इलाकों में भारी तबाही मचाई। बाढ़ और मलबे ने सड़कें, पुल, मकान और दूसरी बुनियादी सुविधाएं तबाह कर दीं। शुरुआती रिपोर्टों में बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने और सैकड़ों के लापता होने की जानकारी सामने आई है। चीन के तिब्बती क्षेत्र में भी जान-माल का नुकसान हुआ है। इसलिए यह घटना किसी एक देश की त्रासदी नहीं है। यह हिमालयी क्षेत्र में सीमा पार आपदा-सूचना तंत्र की कमजोरी का भी बड़ा उदाहरण बनकर सामने आई है।

नेपाल में चीन पर समय पर सूचना साझा नहीं करने के आरोप लग रहे हैं। नेपाली विदेश मामलों के जानकारों और पत्रकारों ने भी इस मुद्दे पर सवाल उठाए हैं। हालांकि, यह भी महत्वपूर्ण है कि 45 मिनट की देरी और जान बचने की संभावित संख्या से जुड़े दावों की पूरी स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हुई है। चीन की ओर से आधिकारिक स्तर पर क्या सूचना साझा की गई, कब की गई और दोनों देशों के बीच आपदा-सूचना साझा करने की निर्धारित व्यवस्था क्या थी इन सवालों के स्पष्ट जवाब सामने आना बाकी हैं। यही वजह है कि इस घटना को सीधे धोखा घोषित करने के बजाय पहले पूरे संचार रिकार्ड की जांच जरूरी है।

नेपाल और चीन के बीच राजनीतिक सीमा है, लेकिन पहाड़ों में बहने वाली नदियां किसी सीमा रेखा को नहीं मानतीं। तिब्बत में भूस्खलन, हिमनद या अचानक जलप्रवाह की घटना होती है तो उसका असर कुछ ही समय में नेपाल के निचले इलाकों में दिखाई दे सकता है। यही कारण

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

उत्तराखंड में रक्षाबंधन पर चुनावी 'प्रेम'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव अभी दूर हैं, लेकिन चुनावी मौसम की आहट इतनी साफ सुनाई देने लगी है कि अब राखी के धागे में भी राजनीति दिखाई देने लगी है। शहर से लेकर कस्बों तक रक्षाबंधन कार्यक्रमों की धूम है। कहीं महिला सम्मेलन के नाम पर बहनों को बुलाया जा रहा है, कहीं राखी बांधने का कार्यक्रम हो रहा है और कहीं मंच पर नेताओं की कलाई पर राखियों की इतनी परतें चढ़ रही हैं कि लगता है जैसे भाईचारे का प्रमाणपत्र बांटा जा रहा हो। सवाल यह नहीं कि राखी क्यों बांधी जा रही है। सवाल यह है कि राखी बांधने के बाद नेता क्या कर रहे हैं?

रक्षाबंधन भाई-बहन के रिश्ते का त्योहार है। लेकिन चुनाव के करीब आते-आते यह रिश्ता राजनीतिक फोटो फ्रेम में बदलता नजर आ रहा है। नेता बहनों के बीच पहुंच रहे हैं, राखियां बंधवा रहे हैं, आशीर्वाद ले रहे हैं और फिर तस्वीरें सोशल मीडिया पर पहुंच रही हैं। तस्वीर में नेता की कलाई है, सामने महिलाओं की भीड़ है और पीछे बड़े-बड़े बैनर हैं। राजनीति में अब शायद यही नया गणित है जितनी राखियां, उतनी ताकत। लेकिन लोकतंत्र में ताकत राखियों की संख्या से नहीं, जनता के भरोसे से तय होती है।

उत्तराखंड की राजनीति में महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। पहाड़ के गांवों में घर, खेत, पानी, जंगल और पलायन की मार सबसे ज्यादा महिलाओं ने झेली है। पहाड़ की महिला सिर्फ वोटर नहीं है, वह परिवार के राजनीतिक फैसले को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण आवाज भी है। शायद इसी वजह से चुनाव से पहले हर राजनीतिक दल और हर संभावित प्रत्याशी महिला मतदाताओं के बीच अपनी मौजूदगी दर्ज कराना चाहता है। राखी इस राजनीति का सबसे आसान और

◆नेताओं की कलाई पर लगा राखियों का अंबार
◆त्योहार के आड़ में शुरू हुआ कार्यक्रमों का दौर
◆भाईचारे से ज्यादा वोटों की गणित साधी जा रही
◆कलाई पर चढ़ती राखियों की परतें, मंच के बैनर
◆बहन की कलाई से चुनावी ताकत नाप रहे हैं नेता

भावनात्मक माध्यम बन गई है।

नेता बहनों से राखी बंधवा रहे हैं। बहनें भी राखी बांध रही हैं। मंच पर मुस्कान है। कैमरे हैं। भाषण हैं। तालियां हैं। लेकिन मंच से उतरने के बाद वही पुराना सवाल खड़ा है महिलाओं के लिए किया क्या? जिस बहन ने राखी बांधी, उसके गांव में पानी की समस्या है तो उसका समाधान कब होगा? जिस महिला ने मंच पर आकर नेता को भाई माना, उसके परिवार का बेटा रोजगार के लिए प्रदेश से बाहर क्यों जा रहा है? जिस महिला ने तालियां बजाईं, उसके गांव की सड़क बरसात में क्यों बंद हो जाती है? पहाड़ की बेटी की शिक्षा, सुरक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य की चिंता चुनावी कैलेंडर के किस पन्ने पर लिखी है? इन सवालों का जवाब राखी की फोटो में नहीं मिलता और यही उत्तराखंड की चुनावी राजनीति की असली कहानी है।

दरअसल, चुनाव से पहले नेताओं की गतिविधियां बदल जाती हैं। जनता अचानक परिवार बन जाती है। कोई बहनों का भाई बन जाता है, कोई युवाओं का साथी, कोई किसानों का हितैषी और कोई पहाड़ का बेटा। चुनाव बीतते ही रिश्तों की यह शब्दावली धीरे-धीरे सरकारी फाइलों की भाषा में बदल जाती है। इस बार राखी का राजनीतिक मौसम भी कुछ ऐसा ही संदेश दे रहा है। किसी नेता के कार्यक्रम में कितनी महिलाएं पहुंचीं, कितनी राखियां बंधीं, कितने समर्थक आए और कितनी तस्वीरें वायरल हुईं इन सबका हिसाब रखा जा रहा है। मानो विधानसभा चुनाव का सर्वे किसी चुनावी एजेंसी ने नहीं, राखी की थाली ने कर दिया हो।लेकिन चुनावी राजनीति इतनी सरल नहीं है।

महिलाएं अब सिर्फ मंच पर बैठकर भाषण सुनने वाली भीड़ नहीं हैं। वह सवाल पूछती हैं। वे सरकारी योजनाओं का लाभ देखती हैं। वह अपने बच्चों के रोजगार को देखती हैं। महंगाई महसूस करती हैं। सड़क, अस्पताल और स्कूल की हालत जानती हैं। उन्हें पता है कि चुनाव के समय कौन उनके घर आया था और पांच साल में कौन कितनी बार आया। इसलिए राखी बांधने की प्रतियोगिता में जुटे नेताओं को यह भी याद रखना चाहिए कि राखी की डोर भावनात्मक जरूर है, लेकिन मतदाता की स्मृति उससे भी मजबूत होती है।

उत्तराखंड में 2027 का चुनाव सिर्फ कुर्सी का चुनाव नहीं होगा। यह पांच साल के कामकाज का हिसाब मांगने वाला

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

महिलाओं और युवाओं को साइबर अपराध से बचाव, नशामुक्ति का दिया संदेश

अल्मोड़ा(आरएनएस)। महिलाओं, बालिकाओं और ग्रामीणों को सुरक्षा एवं उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से महिला कोतवाली अल्मोड़ा पुलिस ने ग्राम शैल में जनजागरूकता अभियान चलाया। अभियान के दौरान साइबर अपराध, मानव तस्करी, बाल विवाह, महिला सुरक्षा और नशामुक्ति जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चंद्रशेखर घोडके के निर्देश पर संचालित अभियान में प्रभारी निरीक्षक महिला कोतवाली जानकी भंडारी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने ग्रामीणों से संवाद कर उनकी समस्याएं और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं की जानकारी भी ली। पुलिस टीम ने महिलाओं एवं बालिकाओं को गौरा शक्ति ऐप की उपयोगिता समझाते हुए उनके मोबाइल फोन में ऐप डाउनलोड कराया। साथ ही साइबर ठगी से बचाव के उपाय, मानव तस्करी की पहचान, महिला एवं बाल सुरक्षा से जुड़े कानूनी प्रावधानों की जानकारी देकर सतर्क रहने का संदेश दिया। अभियान के दौरान %बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ% अभियान के तहत अभिभावकों से बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देने और उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजने की अपील की गई। पुलिस ने बाल विवाह के दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए नाबालिगों के विवाह पर रोक लगाने और ऐसी घटनाओं की सूचना पुलिस को देने का आग्रह भी किया। युवाओं को नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की सलाह दी गई। इसके अलावा महिलाओं एवं बालिकाओं को आपात स्थिति में तत्काल सहायता के लिए डायल-112, महिला हेल्पलाइन-1090 सहित अन्य महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई।

केंद्रीय कारागार में बंदियों के साथ मनाया रक्षाबंधन

रुद्रपुर(आरएनएस)। भाई-बहन के प्रेम और विश्वास का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व केंद्रीय कारागार, सितारगंज में मनाया गया। एकल विद्यालय संच, सितारगंज की ओर से बहनों का प्रतिनिधिमंडल कारागार पहुंचा और बंदियों की कलाइयों पर राखी बांधकर उन्हें अपनत्व और भाईचारे का संदेश दिया। लंबे समय से परिवार से दूर रह रहे बंदियों के लिए यह अवसर भावुक कर देने वाला रहा। बहनों के राखी बांधने के दौरान कई बंदियों की आंखें नम हो गईं। वरिष्ठ अधीक्षक अनुराग मलिक ने कहा कि रक्षाबंधन केवल राखी बांधने का पर्व नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास, अपनत्व और सामाजिक समरसता का संदेश देता है।कारागार में निरुद्ध बंदियों के जीवन में ऐसे आयोजनों का विशेष महत्व है। इससे उनमें यह भावना विकसित होती है कि वे समाज से कटे हुए नहीं हैं, बल्कि समाज का हिस्सा हैं। उन्होंने कहा कि बंदियों के सुधार और पुनर्वास के लिए अनुशासन के साथ मानवीय संवेदना तथा सकारात्मक वातावरण भी आवश्यक है। सामाजिक संस्थाओं की ओर से कारागार में ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने से बंदियों में सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना मजबूत होती है। ये प्रयास उन्हें अपने अतीत से सीख लेकर बेहतर भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में एकल विद्यालय संच की बहनों के साथ सामाजिक कार्यकर्ता महेश मित्तल और सभासद सतीश उपाध्याय मौजूद रहे।

एसआईआर की विसंगतियों को लेकर कांग्रेस ने किया धरना प्रदर्शन

काशीपुर(आरएनएस)। एसआईआर में विसंगतियों और आपत्तियों के निस्तारण को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने तहसील परिसर में प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने भाजपा सरकार और स्थानीय प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए तहसीलदार कार्यालय के सामने धरना दिया और लोकतंत्र की हत्या का आरोप लगाया। महानगर कांग्रेस अध्यक्ष अलका पाल के नेतृत्व में कार्यकर्ता तहसील परिसर पहुंचे। इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने प्रशासन पर आरोप लगाया कि भाजपा सरकार के इशारे पर स्थानीय प्रशासन एसआईआर की विसंगतियों और आपत्तियों के निस्तारण में लापरवाही बरत रहा है। उनका कहना था कि प्रशासनिक अधिकारी लोगों की शिकायतों का जवाब देने को तैयार नहीं हैं।कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि अधिकारी एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर मतदाताओं को सुनियोजित रणनीति के तहत मतदान के अधिकार से वंचित करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में किसी को भी मतदान के अधिकार से नहीं रोका जा सकता, लेकिन स्थानीय प्रशासन के रवैये से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह भाजपा की इकाई के रूप में काम कर रहा है। यहां पूर्व महानगर अध्यक्ष मुशर्रफ हुसैन, जितेंद्र सरस्वती, संदीप सहगल, इंदू मान, सारिम सैफी, संजीव शर्मा, अर्पित मेहरोत्रा, विनोद हौंडा, त्रिलोक सिंह अधिकारी, परम सिद्धू, अरुण चौहान, सादन इकबाल आदि रहे।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *साध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

कांग्रेस का 'दावा' तय है सत्ता परिवर्तन

◆बेरोजगारी और किसानी के मुद्दे बनेंगे चुनावी हथियार, कहा- कोरे प्रचार से नहीं छिपेंगे जनता के सवाल

◆उत्तराखंड में चुनावी पारा हाई, युवाओं, किसानों और कर्मचारियों की अनदेखी पर आर-पार की तैयारी

◆सिर्फ योजनाओं के बखान से नहीं चलेगा काम, अनसुलझे सवालों पर भाजपा को घेरने की रणनीति तैयार

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सियासत में विधानसभा चुनाव की आहट के साथ राजनीतिक तापमान बढ़ने लगा है। कांग्रेस ने प्रदेश में बड़े राजनीतिक बदलाव का दावा करते हुए भाजपा पर एक बार फिर हमला तेज कर दिया है। पार्टी का कहना है कि प्रदेश की जनता अब बदलाव के मूड में है और आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा को इसका जवाब मिलेगा। कांग्रेस के इस दावे के बाद सियासी गलियारों में आरोप-प्रत्यारोप का दौर और तेज होने के आसार हैं।

कांग्रेस का निशाना सीधे तौर पर प्रदेश की भाजपा सरकार और उसके कामकाज पर है। पार्टी नेताओं का आरोप है कि सरकार के कार्यकाल में युवाओं, बेरोजगारों, किसानों, कर्मचारियों और आम लोगों से जुड़े कई सवाल अनसुलझे हैं। कांग्रेस इन मुद्दों को चुनावी हथियार बनाने की तैयारी में है। पार्टी का मानना है कि महज सरकारी योजनाओं और उपलब्धियों के प्रचार से जनता के सवाल खत्म नहीं होंगे।

कांग्रेस नेताओं का कहना है कि उत्तराखंड की जनता ने लंबे समय तक भाजपा को मौका दिया है, लेकिन अब वह सरकार से कामकाज का हिसाब मांग रही है। बेरोजगारी और भर्ती परीक्षाओं से जुड़े विवाद, पलायन, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, सड़कों की स्थिति और महंगाई जैसे मुद्दों को कांग्रेस लगातार उठाती रही है। पार्टी अब इन्हीं सवालों को गांव-गांव तक ले जाने की रणनीति पर काम कर रही है।

कांग्रेस के इस आक्रामक रुख के पीछे चुनावी गणित भी देखा जा रहा है। पार्टी लंबे समय से संगठनात्मक कमजोरी और आपसी खींचतान की चुनौती से जूझती रही है। ऐसे में भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने के साथ ही कांग्रेस के सामने अपने कार्यकर्ताओं और नेताओं को एकजुट करने की चुनौती भी है। केवल भाजपा विरोध के सहारे सत्ता में वापसी आसान नहीं होगी। जनता के सामने कांग्रेस को अपना वैकल्पिक एजेंडा भी मजबूती से रखना होगा।

भाजपा ने कांग्रेस के बदलाव के दावे को पहले से चली आ रही राजनीतिक बयानबाजी का हिस्सा माना है। भाजपा का तर्क है कि जनता सरकार के विकास कार्यों को देख रही है और विपक्ष केवल आरोप लगाने तक सीमित है। पार्टी लगातार यह संदेश देने की कोशिश कर रही है कि प्रदेश में सड़क, चारधाम, पर्यटन, बुनियादी ढांचे और रोजगार से जुड़े क्षेत्रों में काम हुआ है।

यही वह मोर्चा है जहां आने वाले दिनों में दोनों दलों के बीच असली राजनीतिक मुकाबला दिखाई देगा। कांग्रेस जहां बदलाव की जरूरत का नैरेटिव खड़ा करना चाहती है, वहीं भाजपा काम और विकास को चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश करेगी। दोनों दलों के बीच यह टकराव जितना बढ़ेगा, उतना ही चुनावी विमर्श आरोपों से निकलकर उपलब्धियों और जनसवालों की तरफ जाने की संभावना रहेगी।

कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि बदलाव के दावे को जमीन पर संगठनात्मक ताकत में कैसे बदला जाए। भाजपा के लिए चुनौती सत्ता विरोधी संभावनाओं को रोकने की होगी। उत्तराखंड में हर चुनाव में क्षेत्रीय संतुलन, पहाड़-मैदान, युवा मतदाता, महिला मतदाता और स्थानीय मुद्दे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए किसी भी दल के लिए केवल बड़े राजनीतिक दावे पर्याप्त नहीं होंगे।

फिलहाल कांग्रेस ने भाजपा के खिलाफ मोर्चा खोलकर यह संकेत जरूर दे दिया है कि वह आगामी चुनाव को लेकर अपनी राजनीतिक भाषा और रणनीति दोनों को आक्रामक बनाने जा रही है। भाजपा भी जवाब देने में पीछे रहने वाली नहीं है। ऐसे में आने वाले दिनों में उत्तराखंड की राजनीति में बयानबाजी और तेज होगी।

बदलाव का दावा कांग्रेस ने किया है, लेकिन उस दावे को जनसमर्थन में बदलना अब उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती है। दूसरी ओर भाजपा के सामने सत्ता में रहते हुए यह साबित करने की चुनौती है कि उसके पक्ष में केवल संगठन नहीं, बल्कि जनता का भरोसा भी कायम है। चुनाव की असली तस्वीर इन्हीं दोनों दावों की जमीन पर होने वाली परीक्षा से सामने आएगी।

पेट्रोल पंप पर बिकेंगे ग्रामीण महिलाओं द्वारा तैयार उत्पाद

रुद्रपुर(आरएनएस)। ग्रामीण महिलाओं के हाथों तैयार उत्पादों को अब बाजार की नई पहुंच मिलने जा रही है। ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना के सहयोग से इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) और विकासखंड रुद्रपुर की रुद्रा स्वायत्त सहकारिता समिति (सीएलएफ) के बीच महत्वपूर्ण एमओयू हुआ है। इसके तहत कोको पेट्रोल पंप, गौतम हॉस्पिटल के पास, रुद्रपुर में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों की बिक्री के लिए विशेष आउटलेट स्थापित किया जाएगा। इस पहल से ग्रामीण महिलाओं को केवल उत्पाद बनाने तक सीमित रहने के बजाय उन्हें सीधे बाजार और ग्राहकों से जोड़ने का अवसर मिलेगा। पेट्रोल पंप पर प्रतिदिन आने वाले ग्राहकों तक स्थानीय, गुणवत्तापूर्ण और पारंपरिक उत्पाद पहुंचने से इनकी बिक्री और पहचान बढ़ने की उम्मीद है। ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना के मार्गदर्शन में हुई यह साझेदारी स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों को संगठित बाजार उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। आउटलेट के माध्यम से महिलाओं को नए ग्राहक, बेहतर बाजार और आय बढ़ाने के अवसर मिलेंगे। इससे उत्पाद निर्माण से लेकर विपणन तक की पूरी मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की भागीदारी मजबूत होगी। एमओयू के दौरान रुद्रा स्वायत्त सहकारिता समिति की अध्यक्षा बबीता यादव, जिला टीम की ओर से सहायक प्रबंधक सेल्स गोविंद सिंह डसीला तथा आईओसीएल की ओर से सेल्स हेड मोनिका छावल और डिविजनल हेड मौजूद रहे।

सूचना के अधिकार पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित, छात्राओं को किया सम्मानित

अल्मोड़ा(आरएनएस)। सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के प्रति छात्राओं और समाज में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से राजा आनंद सिंह राजकीय बालिका इंटर कॉलेज अल्मोड़ा में श्रमजीवी पत्रकार संगठन एवं पैलाग फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आरटीआई के प्रावधानों, इसके प्रभावी उपयोग और नागरिकों के अधिकारों पर विस्तार से जानकारी दी गई। मुख्य वक्ताओं ने कहा कि सूचना का अधिकार अधिनियम केवल सरकारी सूचनाएं प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि शासन-प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने वाला महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक अधिकार है। छात्राओं से इस अधिकार का जिम्मेदारी के साथ उपयोग करने का आह्वान भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को सम्मानित किया गया। प्रियंका राणा ने प्रथम, हर्षिता जोशी ने द्वितीय, लक्ष्मी बिष्ट ने तृतीय, निशिता अधिकारी ने चतुर्थ तथा दिया कोहली ने पंचम स्थान प्राप्त किया। मुख्य वक्ता राजेंद्र सिंह बिष्ट तथा नैनीताल उच्च न्यायालय के अधिवक्ता विनोद चंद्र तिवारी ने छात्राओं को दैनिक जीवन में सूचना के अधिकार अधिनियम की उपयोगिता समझाई। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकारों एवं अन्य वक्ताओं ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए सूचना के अधिकार अधिनियम की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रभारी प्रधानाचार्य सौम्या टम्टा ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों से प्राप्त ज्ञान को जीवन में अपनाना चाहिए। उन्होंने आयोजन के लिए श्रमजीवी पत्रकार संगठन एवं पैलाग फाउंडेशन का आभार भी व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के अध्यक्ष जगजीवन सिंह बिष्ट ने की, जबकि संचालन दया कृष्ण कांडपाल ने किया। इस अवसर पर दया कृष्ण कांडपाल, गोपेश उप्रेती, दिनेश भट्ट, दयानंद कठैत, प्रकाश पांडे, संगठन के संरक्षक संजय अग्रवाल, अधिवक्ता नीमा आर्या सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

क्या आप जानते हैं कि मच्छर क्यों होते हैं आपकी ओर आकर्षित? जानें कारण

मच्छरों के काटने का अनुभव बहुत ही कष्टदायक और दर्दभरा होता है। यह सिर्फ एक असुविधा नहीं है बल्कि इससे कई स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकती हैं। इसलिए मच्छरों को घर के आसपास न भटकने दें। अगर आपको लगता है कि मच्छर आपको ज्यादा काटते हैं तो इसकी वजह जानना जरूरी है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे कारण बताते हैं, जो आपको मच्छरों के काटने का मुख्य कारण बन सकते हैं।

शरीर की गंध

मच्छरों को उन लोगों की गंध बहुत आकर्षित करती है, जिनके शरीर से काफी ज्यादा पसीना आता है। दरअसल, पसीने में मौजूद कुछ तत्व मच्छरों को अपनी ओर खींचते हैं। इसके अलावा जब आप तेज एक्सरसाइज करते हैं या दौड़ते हैं तो आपके शरीर से निकलने वाला पसीना भी मच्छरों को आकर्षित कर सकता है। इसलिए शरीर की गंध का ध्यान रखें ताकि मच्छर आपको काटने के लिए आकर्षित न हो।

काले रंग के कपड़े

अगर आप काले रंग के कपड़े पहनना पसंद करते हैं तो आपको बता दें कि इससे भी मच्छर आपकी ओर आकर्षित होते हैं और वे आपको अपना शिकार बना ही लेते हैं। दरअसल, काले रंग के कपड़े पहनने से आप ज्यादा गर्म महसूस कर सकते हैं क्योंकि गर्म वातावरण मच्छरों को आकर्षित करता है। इसलिए अगर आप गर्म मौसम में काले रंग के कपड़े पहनते हैं तो आपको मच्छरों से ज्यादा खतरा होता है।

नमी और तापमान

मच्छर गर्म और नम वातावरण में तेजी से पनपते हैं। इसलिए बरसात के दौरान या गर्मियों में जब नमी ज्यादा होती है, तब मच्छरों का प्रकोप बढ़ जाता है।

इसके अलावा उच्च तापमान भी मच्छरों की गतिविधि को बढ़ा सकता है।

इसलिए बरसात में घर में घुसने वाले मच्छरों से बचाव के लिए घर की खिड़कियों और दरवाजों को बंद रखें और खुद को मच्छरों से बचाने के लिए कुछ उपाय जरूर अपनाएं।

फल और फूल

फल और फूल भी मच्छरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। दरअसल, फलों में मौजूद प्राकृतिक मिठास और फूलों की खुशबू मच्छरों को आकर्षित करती है।

इसलिए अगर आप अपने घर या आंगन में फलों के छिलके या फूल रख देते हैं तो इससे मच्छरों की संख्या बढ़ सकती है।

हालांकि, अगर आपके घर में फल और फूल नहीं हैं तो मच्छरों को दूर रखने के लिए कुछ उपाय जरूर अपनाएं।

बालकनी को रात में भी खूबसूरत बना सकते हैं ये पौधे, जानिए

अगर आप अपनी बालकनी को रात में भी खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो इसके लिए कुछ ऐसे पौधे चुन सकते हैं, जो रात में भी महकते हैं। ये पौधे न केवल आपकी बालकनी को सजाएंगे, बल्कि इनकी खुशबू आपको सुकून भी देगी। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे पौधों के बारे में बताते हैं, जो रात में महकते हैं और आपकी बालकनी को एक खास लुक देंगे।

रात की रानी

रात की रानी एक ऐसा पौधा है, जिसकी खुशबू रात में ही आती है। इस पौधे के फूल रात के समय खिलते हैं और उनकी खुशबू बहुत ही मनमोहक होती है।

इसे लगाना आसान है और इसकी देखभाल भी कम करनी पड़ती है। यह पौधा गर्मियों में ज्यादा खिलता है, जिससे आपकी बालकनी पर एक खास माहौल बनता है।

इसके अलावा यह पौधा पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होता है।

चमेली

चमेली का पौधा भी रात में महकता है और इसकी खुशबू बहुत ही ताजगी भरी होती है। चमेली के फूलों का उपयोग कई औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है।

इस पौधे की देखभाल करना आसान है और यह किसी भी प्रकार की मिट्टी में उग सकता है।

इसे नियमित रूप से पानी देने की जरूरत नहीं होती, जिससे यह बहुत ही कम देखभाल में भी अच्छा फलता-फूलता है। इसकी खुशबू आपके मन को शांत रखेगी।

तुलसी

तुलसी का पौधा तो लगभग हर घर में मिलता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि तुलसी की खुशबू रात में भी आती है? इसे नियमित रूप से पानी देने की जरूरत नहीं पड़ती। बस इसे थोड़ी धूप चाहिए होती है।

तुलसी के पौधे का उपयोग औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है। इसकी खुशबू आपको सुकून देगी और आपके मन को शांत रखेगी। इसे किसी भी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है।

बेला

बेला एक ऐसा पौधा है, जिसकी सफेद कलियां रात में खिलती हैं। इसकी खुशबू बहुत ही ताजगी भरी होती है।

इन सभी पौधों को आप अपनी बालकनी में लगाकर न केवल उसे सुंदर बना सकते हैं बल्कि रात में आने वाली ताजगी भरी खुशबू से उसका माहौल भी बदल सकते हैं।

इन पौधों की देखभाल करना आसान है और ये कम पानी मांगते हैं, जिससे आपकी बालकनी हमेशा हरी-भरी रहेगी।

चुनाव से पहले भाजपा का बड़ा मीडिया दांव

8 नए चेहरे, आक्रामक तेवर

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच भाजपा ने अपने मीडिया मोर्चे को और धार देने की कवायद शुरू कर दी है। पार्टी ने प्रवक्ता टोली का विस्तार करते हुए आठ नए प्रवक्ताओं की घोषणा की है। इसे महज संगठनात्मक विस्तार के बजाय आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा की व्यापक संचार रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। चुनावी माहौल बनने के साथ ही पार्टी अब सरकार की उपलब्धियों, विपक्ष के आरोपों और जनमुद्दों पर अपना पक्ष अधिक आक्रामक और नियमित तरीके से रखने की तैयारी में है।

◆विपक्षी हमलों का जवाब देने और उपलब्धियों को भुनाने की रणनीति
◆भाजपा का आठ नए प्रवक्ताओं के सहारे हवा का रुख मोड़ने की कवायद
◆चुनाव से पहले आक्रामक अंदाज में पक्ष रखने की तैयारी में है भाजपा

भाजपा के लिए मीडिया और सोशल मीडिया चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे में प्रवक्ताओं की संख्या बढ़ाने का सीधा अर्थ यही है कि पार्टी अलग-अलग मुद्दों पर अधिक प्रभावी ढंग से अपना पक्ष जनता के सामने रखना चाहती है। आठ नए चेहरों को जिम्मेदारी देकर भाजपा ने संकेत दिया है कि चुनावी मैदान में केवल बूथ और संगठन ही नहीं, बल्कि नैरेटिव की लड़ाई भी उतनी ही महत्वपूर्ण होगी।

पार्टी के सामने इस समय दोहरी चुनौती है। एक ओर उसे प्रदेश सरकार के कामकाज को उपलब्धियों के रूप में जनता तक पहुंचाना है, वहीं दूसरी ओर कांग्रेस समेत विपक्षी दलों के लगातार उठाए जा रहे सवालों का जवाब भी देना है। बेरोजगारी, भर्ती परीक्षाएं, पलायन, सड़क और स्वास्थ्य सुविधाएं, कानून-व्यवस्था, आपदा प्रबंधन तथा एसआईआर जैसे मुद्दे आने वाले दिनों में चुनावी बहस के केंद्र में रह सकते हैं। ऐसे में भाजपा की नई प्रवक्ता टोली को इन मुद्दों पर पार्टी की स्पष्ट लाइन सामने रखनी होगी।

प्रवक्ता टोली का विस्तार यह भी बताता है कि भाजपा अब चुनावी संवाद को केवल प्रेस कांफ्रेंस तक सीमित रखने के पक्ष में नहीं है। टेलीविजन डिबेट, डिजिटल प्लेटफार्म, सोशल मीडिया और स्थानीय मीडिया के माध्यम से एक साथ राजनीतिक संदेश पहुंचाने की रणनीति पर पार्टी काम कर रही है। अलग-अलग क्षेत्रों और विषयों से जुड़े प्रवक्ताओं को आगे करने से पार्टी को स्थानीय मुद्दों पर भी तत्काल प्रतिक्रिया देने में मदद मिल सकती है।

दिलचस्प यह है कि भाजपा ने यह कदम ऐसे समय उठाया है जब कांग्रेस भी संगठन को चुनावी मोड में लाने की कोशिश कर रही है। कांग्रेस की ओर से सरकार के खिलाफ बेरोजगारी, युवाओं, भर्ती और जनहित के मुद्दों को लेकर लगातार हमलावर रुख अपनाया जा रहा है। ऐसे में भाजपा की नई प्रवक्ता टोली का पहला लक्ष्य विपक्ष के हमलों का जवाब देना और सरकार के पक्ष में माहौल तैयार करना होगा।

लेकिन यहां भाजपा के लिए चुनौती भी कम नहीं है। प्रवक्ताओं की संख्या बढ़ाने से ज्यादा महत्वपूर्ण यह होगा कि सभी प्रवक्ताओं का संदेश एक हो। अलग-अलग मंचों पर यदि अलग-अलग बयान सामने आते हैं तो विस्तार का उद्देश्य ही कमजोर पड़ सकता है। चुनाव के समय एक ही मुद्दे पर पार्टी की अलग-अलग व्याख्या विपक्ष को हमले का अवसर दे सकती है। इसलिए नई टोली के सामने संदेश की एकरूपता और तथ्यों के साथ जवाब देने की बड़ी जिम्मेदारी होगी।

दूसरी ओर कांग्रेस के लिए भी भाजपा का यह कदम एक राजनीतिक संकेत है। अब उसे अपने मीडिया तंत्र को और सक्रिय करना होगा। यदि भाजपा रोजाना कई मुद्दों पर अपना पक्ष रखती है और कांग्रेस की प्रतिक्रिया देर से आती है, तो राजनीतिक विमर्श में भाजपा का नैरेटिव हावी हो सकता है। चुनावी राजनीति में कई बार मुद्दे से ज्यादा महत्वपूर्ण यह हो जाता है कि जनता के बीच उस मुद्दे की व्याख्या कौन और कितनी तेजी से करता है।

उत्तराखंड में 2027 का विधानसभा चुनाव अभी दूर दिखाई दे सकता है, लेकिन राजनीतिक दलों की गतिविधियां बता रही हैं कि चुनावी तैयारी शुरू हो चुकी है। भाजपा संगठन, बूथ और मीडिया तीनों मोर्चों पर अपनी मशीनरी को सक्रिय कर रही है। प्रवक्ता टोली का विस्तार इसी तैयारी की अगली कड़ी है।

अब देखना यह होगा कि आठ नए प्रवक्ता पार्टी की आवाज को कितनी मजबूती देते हैं। भाजपा के लिए यह सिर्फ आठ नए नाम जोड़ने का फैसला नहीं, बल्कि चुनाव से पहले मीडिया के मैदान में अपनी टीम को मजबूत करने की कवायद है। आने वाले महीनों में यह टोली जितनी सक्रिय होगी, उतना ही स्पष्ट होगा कि भाजपा चुनावी मुद्दों को अपने पक्ष में मोड़ने की रणनीति में कितनी सफल रहती है।

शब्द सामर्थ्य -048

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. संबंध, लगाव, नाता, काम 2. सिसकने की आवाज, सीत्कार 4. आग की ज्वाला, दहक 5. दियासलाई 7. प्रतिकार, प्रतिशोध 8. बाबुल की दुआएं लेती जा... गीतवाली बलराज साहनी, मनोजकुमार, राजकुमार, वहीदा की फिल्म 11. करतल ध्वनि 13. आपसी व्यवहार का संबंध, वास्ता 15. वचन, जीभ 16. रोगियों को स्वस्थ और मृतकों को जीवित कर देने वाला 17. एक सुंदर फूलदार वृक्ष 19. पत्नी, बीवी 20. मसालेदार सुगंधित सुरती।

ऊपर से नीचे

1. उचित, उपयुक्त, जायज 2. किवाड़ को अंदर से बंद करने लगा छड़, चटखनी 3. मांस के अत्यंत छोटे टुकड़े 4. माथा, मस्तक 6. कटोरी के आकार का नलीदार पात्र जिसमें तंबाकू रखकर पीते हैं 9. रेखा 10. खून से लथपथ 11. छिपकर बुरी नजर से ताकने की क्रिया, रह रहकर ताकने की क्रिया 12. व्यापार, धंधा 13. शृंगार करना, साजन 14. श्रवणइंद्रीय 16. सीमा, हद 18. चमड़ा, चाम 19. बोझ, दबाव।

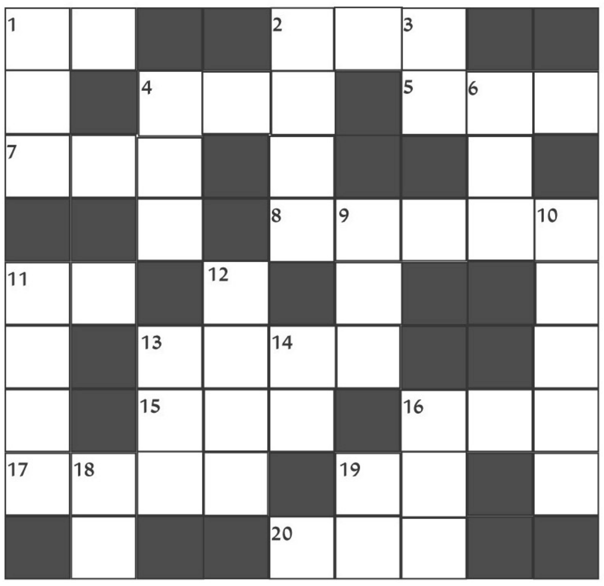

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 47 का हल

मै	दा	न		स	र	ग	म	
त्री		सी			क्षा		धु	र्रा
	सा	ह	स				र	
स्वा	ग	त		स	म	झौ	ता	
व	र			र				म
लं		वि	ला	स			दा	म
बी	न		ज		सा	मा	न	ता
	ज		वा	हि	या	त		
त	र	की	ब		ना		खा	ली

गर्भवती महिलाओं के लिए खतरा बन सकती हैं ये चीजें, मानसून के दौरान इनसे रहें दूर

मानसून का मौसम कई बीमारियों का कारण बन सकता है, लेकिन गर्भवती महिलाओं के लिए यह और भी ज्यादा खतरनाक है। इसका कारण है कि मानसून के दौरान होने वाली बीमारियां गर्भवती महिलाओं और उनके होने वाले बच्चे के लिए गंभीर खतरा बन सकती हैं। आइए आज हम आपको ऐसी चीजों के बारे में बताते हैं, जिनसे गर्भवती महिलाओं को मानसून के दौरान दूरी बनाकर रखनी चाहिए, ताकि वे सुरक्षित रहें।

तैराकी : मानसून में तैराकी करने से बचना चाहिए, क्योंकि तालाबों या स्विमिंग पूल में मौजूद कीटाणु पेट के संक्रमण से लेकर डेंगू और चिकनगुनिया जैसी बीमारियों तक का कारण बन सकते हैं। ये बीमारियां गर्भवती महिलाओं के लिए बहुत गंभीर हो सकती हैं। खासकर, अगर इनकी वजह से अस्पताल जाने की जरूरत पड़े तो यह गर्भवती महिला और उसके बच्चे के लिए बहुत खतरनाक हो सकता है। इसलिए, तैराकी से दूरी बनाए रखना बेहतर है।

ठंडा पेय और आइसक्रीम : मानसून के दौरान ठंडा पेय और आइसक्रीम का सेवन भी गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है। इसका कारण है कि मानसून में इन पेय और खाद्य पदार्थों में बैक्टीरिया पनपने लगते हैं, जो पेट के संक्रमण का कारण बन सकते हैं। ये खाद्य पदार्थ काफी ठंडे भी होते हैं और बारिश के कारण भी मौसम ठंडा हो जाता है। ऐसे में इनके सेवन से गर्भवती महिलाओं के बीमार पड़ने का खतरा बढ़ सकता है।

नंगे पैर चलना : मानसून में सड़क पर नंगे पैर चलना भी गलती है, फिर चाहे आप किसी भी स्टेज पर गर्भवती क्यों न हों। इसका कारण है कि मानसून में सड़कें गीली रहती हैं और इस कारण इनमें मौजूद कीटाणु आपको बीमार कर सकते हैं। यही नहीं, गीली सड़कें फिसलन वाली भी होती हैं, जिससे गिरकर चोट लगने का खतरा भी रहता है। इसलिए, हमेशा जूते या चप्पल पहनकर ही बाहर निकलना चाहिए।

खुली चीजें खाना : मानसून में खुली चीजें खाना भी सही नहीं है। इसका कारण है कि खुली चीजें जल्दी खराब हो जाती हैं और इनका सेवन आपको बीमार कर सकता है। इसलिए, गर्भवती महिलाएं खुली चीजें खाने से बचें। अगर किसी कारण से खुली चीजें खानी भी पड़ जाए तो इनसे होने वाली बीमारियों से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा पानी पिएं और डॉक्टर से संपर्क करें। सुरक्षित और ताजा भोजन का ही सेवन करें।

एरोबिक्स बनाम जैजर्साइज- दोनों में से कौन-सी एक्सरसाइज है ज्यादा लाभदायक

एरोबिक्स और जैजर्साइज दोनों ही ऐसी एक्सरसाइज हैं, जो शरीर को फिट रखने में मदद करती हैं। जहां एरोबिक्स में पारंपरिक व्यायाम शामिल हैं, वहीं जैजर्साइज में नाच-गाने का भी तत्व होता है। दोनों का अपना अलग-अलग महत्व और फायदे हैं। इस लेख में हम इनके बीच के अंतर और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की तुलना करेंगे, जिससे यह समझने में मदद मिलेगी कि आपके लिए कौन सी एक्सरसाइज बेहतर है।

एरोबिक्स क्या है? : एरोबिक्स एक ऐसी एक्सरसाइज है, जिसमें तेज गति वाले व्यायाम शामिल होते हैं। यह सांस लेने की प्रणाली को बेहतर बनाने और शरीर की ऊर्जा को बढ़ाने में मदद करता है। एरोबिक्स में दौड़ना, तैरना, साइकिल चलाना आदि शामिल होते हैं। यह आपके दिल और फेफड़ों को मजबूत बनाता है, जिससे खून का संचार बेहतर होता है। इसके अलावा यह वजन कम करने और मांसपेशियों को मजबूत करने में भी मदद करता है।

जैजर्साइज क्या है? : जैजर्साइज एक नाच-गाने पर आधारित एक्सरसाइज है, जिसमें विभिन्न प्रकार के संगीत और डांस स्टेप्स शामिल होते हैं। यह न केवल आपके दिल की धड़कन को बढ़ाता है बल्कि आपको मजेदार तरीके से फिट रखने में मदद करता है। जैजर्साइज करने से तनाव कम होता है और मानसिक सेहत बेहतर होती है। यह शरीर की लचीलापन को बढ़ाता है और कैलोरी बर्न करने में भी मदद करता है।

दोनों एक्सरसाइज का अंतर : एरोबिक्स और जैजर्साइज दोनों ही व्यायाम हैं, लेकिन इनके तरीके अलग हैं। एरोबिक्स में पारंपरिक व्यायाम शामिल होते हैं, जबकि जैजर्साइज में नाच-गाने का तत्व होता है। एरोबिक्स के लिए किसी विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, जबकि जैजर्साइज में कभी-कभी विशेष उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। दोनों का उद्देश्य शरीर को फिट रखना है, लेकिन इनके तरीके अलग-अलग हैं।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : दोनों ही एक्सरसाइज का सेहत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एरोबिक्स करने से दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है और ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है। यह वजन कम करने और मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद करता है। जैजर्साइज करने से तनाव कम होता है और मानसिक सेहत बेहतर होती है। यह शरीर की लचीलापन को बढ़ाता है और कैलोरी बर्न करने में भी मदद करता है।

इन दोनों में से किसे चुनें? : अब सवाल उठता है कि इन दोनों में से किसे चुनना चाहिए?

अगर आप पारंपरिक व्यायाम पसंद करते हैं तो एरोबिक्स बेहतर विकल्प हो सकता है, वहीं अगर आप मजेदार तरीके से फिट रहना चाहते हैं तो जैजर्साइज आजमा सकते हैं। यह आपकी व्यक्तिगत रुचि और जरूरतों पर निर्भर करता है कि आप कौन-सी एक्सरसाइज चुनें। दोनों का उद्देश्य शरीर को फिट रखना है, लेकिन इनके तरीके अलग-अलग हैं।

मैक्स में मेरा किरदार पिछले किरदारों से काफी ग्लैमरस है : विधात्री बंदी

अभिनेत्री विधात्री बंदी ने फीचर फिल्म मैक्स, मिन और मियोज्स्की में कैरोल सेक्रेराका महत्वपूर्ण किरदार निभाया है। अभिनेत्री ने बताया कि ये किरदार उन्हें किस तरह से मिला है। उन्होंने बताया कि असल में वे किसी और किरदार के लिए ऑडिशन देने के लिए गई थी। उसी दौरान उन्हें कैरोल सेक्रेराका के किरदार के बारे में पढने् का मौका मिला था, जिसके उन्होंने इसे करने के लिए मैनिफेस्ट किया था। उन्होंने कहा, असल में, मैं मिन का ऑडिशन देने के लिए गई थी, लेकिन जब मुझे फिल्म का सारांश दिया गया, तो मैंने उसमें कैरोल सेक्रेराका के बारे में पढ़ा था। उसका किरदार इस तरह से लिखा हुआ था कि उसे पढ़कर मुझे उससे तुरंत जुड़ाव महसूस हुआ, जिसके बाद मैंने सोचा कि अगर इस किरदार के लिए मुझे ऑडिशन देने का मौका मिले, तो मैं जरूर दूंगी। लेकिन मैंने ये बात बस अपने तक ही रखी और किसी को नहीं बताई थी। 2 दिन बाद कास्टिंग टीम से फोन आया कि डायरेक्टर्स चाहते हैं कि मैं कैरोल के लिए ऑडिशन दूं। फिर मैंने ऑडिशन दिया और तुरंत मेरा सिलेक्शन हो गया। सेलेक्ट होने के बाद पैडी ने मुझे पूरी कहानी सुनाई। उस दिन शायद पहली बार ऐसा हुआ कि मैं अजनबियों के सामने रो पड़ी थी, क्योंकि फिल्म ने मेरे दिल को छू लिया था। उसी वक्त मुझे पक्का हो गया था कि मुझे ये फिल्म करनी ही है। अभिनेत्री ने अपने पिछले किरदारों के लुक की तुलना इस किरदार से करते हुए कहा कि कैरोल सेक्रेराका का किरदार उनके पिछले किरदारों से ज्यादा ग्लैमरस है। उन्होंने कहा, फिल्म जलसा में मैंने एक मलयाली पत्रकार का रोल किया था। उसमें मेरा लहजा बहुत भारी था, कोई मेकअप नहीं किया था और बाल भी काफी ज्यादा थे। द डिप्लोमैट में मैंने एक पंजाबी एंबेसी ऑफिसर का किरदार निभाया था, जिसमें मैं फॉर्मल कपड़े पहनती थी, लेकिन इस फिल्म में मैं बिल्कुल मुंबई की लड़की जैसी लग रही हूं। मेरे घुंघराले बाल हैं और मेरा लहजा भी नॉर्मल है।

अभिनेत्री ने आगे अपनी अब तक की जर्नी के बारे में बताया कि उनके करियर की रफ्तार काफी धीमी रही है। उन्होंने कहा, शिद्दत में मैंने एक छोटा रोल किया था। फिर जलसा में मेरा रोल अहम था, उसके बाद द डिप्लोमैट में भी लीड रोल किया और अब इस फिल्म में मैं पूरी लीड कर रही हूं। मेरा करियर धीरे-धीरे आगे बढ़ा है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे मैं एक सही सीढ़ी चढ़ रही हूं। धीरे-धीरे ही सही, लेकिन लगातार।

बिकिनी पहन पूल में उतरीं वाणी कपूर!

बॉलीवुड की जानी मानी अभिनेत्री वाणी कपूर अपकमिंग फिल्म बदतमीज गिल को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच उन्होंने अपने फैंस को अपनी पोस्ट के जरिए तोहफा दिया है। अभिनेत्री ने बिकनी में शानदार पोज दिए हैं। यूजर्स उनकी तस्वीरों की तारीफ कर रहे हैं। वाणी कपूर अपने 38वां जन्मदिन के खास मौके पर उन्होंने ब्लू बिकनी में अपनी शानदार तस्वीरें शेयर की हैं। एक तस्वीर में वह स्वीमिंग पूल में पोज दे रही हैं। एक दूसरी तस्वीर में वह स्वीमिंग पूल के किनारे बैठी हैं। एक और तस्वीर में उन्होंने अपना ग्लैमरस अंदाज दिखाया है।

इंस्टाग्राम पर अपनी तस्वीरें शेयर करते हुए अभिनेत्री ने कैप्शन में लिखा...

सूरज के चारों ओर एक और साल। चीजों को समझने की कम कोशिश कर रही हूं। पलों को जीने पर ज्यादा ध्यान दे रही हूं। ज्यादा जिंदगी, ज्यादा हंसी-खुशी और आगे आने वाली हर चीज के लिए तैयार हूं।

वाणी कपूर ने अपनी तस्वीरें पर सोशल मीडिया पर हंगामा मचा दिया है। उनकी तस्वीरों पर राशी खन्ना ने फायर वाला इमोजी कमेंट किया है। वहीं निमरत कौर ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी है। एक फैन ने लिखा बॉलीवुड की सबसे हॉट अभिनेत्री। एक और यूजर ने उन्हें तबाही कहा है। आपको बता दें कि वाणी कपूर ने शुद्ध देसी रोमांस से बॉलीवुड में कदम रखा था। वह फिल्म बदतमीज गिल में नजर आने वाली हैं। इसमें उनके साथ अपारशक्ति खुराना और परेश रावल होंगे। वह जल्द ही फिल्म सर्वगुण संपन्न का हिस्सा होंगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन और चुनौतियों पर हुई चर्चा

रुद्रपुर (आरएनएस)। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के छह वर्ष -क्रियान्वयन, चुनौतियां एवं विकसित भारत की संकल्पना' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. दीक्षा खम्पा ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों के परिचय के साथ किया। नोडल अधिकारी डॉ. दीपा मखोलिया ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों के जीवन के लक्ष्य निर्धारित करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. अभिमन्यु कुमार ने एनईपी-2020 के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने भारत में शिक्षा की शुरुआत से लेकर स्वतंत्रता के बाद लागू की गई विभिन्न शिक्षा नीतियों और एनईपी-2020 के नए आयामों पर चर्चा की। मुख्य वक्ता डॉ. नवल किशोर लोहनी ने पीपीटी के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न बिंदुओं, इसके उद्देश्यों और अकादमिक क्रेडिट से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां सरलता से समझाईं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. रेनू रानी बंसल ने की। इस दौरान डॉ. जगदीश प्रसाद, डॉ. चंद्रा खाती, डॉ. संजय टम्टा, डॉ. दुर्गा तिवारी, डॉ. कामना और डॉ. प्रज्ञा समेत अन्य मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री घोषणाओं के काम में तेजी लाएं, डीएम ने दिए निर्देश

बागेश्वर(आरएनएस)। मुख्यमंत्री घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर जिलाधिकारी अपूर्वा पांडे ने कलेक्ट्रेट सभागार में विभागवार समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कोई भी घोषणा जनपद स्तर पर लंबित न रहे। कार्यों में तेजी लाते हुए निर्धारित समयसीमा में उन्हें पूरा करें और शासन स्तर पर लंबित प्रकरणों का नियमित अनुश्रवण कर प्रभावी फॉलोअप सुनिश्चित करें। समीक्षा के दौरान डीएम ने कौसानी में प्रस्तावित पार्किंग निर्माण की डीपीआर दोबारा भेजने के निर्देश कार्यदायी संस्था को दिए। रीमा गेस्ट हाउस निर्माण के लिए लोनिवि को भूमि चिह्नित करने और सुमगढ़ में खेल मैदान की डीपीआर जल्द शासन को भेजने के निर्देश युवा कल्याण विभाग को दिए।कपकोट में पूल्ड आवास निर्माण की समीक्षा करते हुए उन्होंने पर्याप्त भूमि उपलब्ध न होने पर छोटे-छोटे भूखंड चिह्नित कर आवास निर्माण की कार्रवाई करने को कहा। जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी ने बताया कि जनपद में कुल 129 मुख्यमंत्री घोषणाओं में 67 पूर्ण हो चुकी हैं, जबकि 51 पर कार्रवाई गतिमान है। छह घोषणाएं अपूर्ण और पांच आंशिक रूप से पूर्ण हैं। कुल 60 घोषणाएं शासन स्तर और दो विभागीय स्तर पर लंबित हैं। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी नरेश कुमार, अपर जिलाधिकारी एनएस नबियाल समेत संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सू- दोकू क्र.048

	9			2				1
		5	1				3	
7				9		8		5
	8		3		7		5	
2		7				1		3
	4			1			8	
6		2			9			
	5		7			3		
		8		5			6	7

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.47 का हल

7	8	2	6	3	1	4	5	9
6	4	1	8	5	9	2	7	3
9	3	5	4	7	2		1	8
2	6	3	1	9	7	5	8	4
5	7	8	3	6	4	1	9	2
1	9	4	5	2	8	7	3	6
4	5	7	2	8	3	9	6	1
3	1	6	9	4	5	8	2	7
8	2	9	7	1	6	3	4	5

आंगनबाड़ी सहायिका की नियुक्ति पर उठे सवाल, निष्पक्ष जांच की मांग

रुद्रपुर(आरएनएस)। बाजपुर क्षेत्र की एक आंगनबाड़ी सहायिका/कार्यकर्ती की नियुक्ति से जुड़े अभिलेखों में कथित विसंगतियों का मामला सामने आया है। ग्राम भट्पुरी निवासी कमला तिवारी ने मुख्य विकास अधिकारी को पत्र भेजकर बाल विकास परियोजना अधिकारी, बाजपुर की जांच को तथ्यात्मक एवं निष्पक्ष नहीं बताते हुए प्रकरण की दोबारा गहन जांच कराने की मांग की है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि संबंधित अभिलेखों में जन्मतिथि, बीपीएल प्रमाणपत्र और पहचान संबंधी दस्तावेजों में अंतर होने के बावजूद इन बिंदुओं को जांच में पर्याप्त गंभीरता से नहीं लिया गया।

शिकायत में कहा गया है कि संबंधित आंगनबाड़ी सहायिका/कार्यकर्ती गुरमीत कौर पत्नी मंजीत सिंह, निवासी पहाड़पुर, बाजपुर के कक्षा आठ के शैक्षिक प्रमाणपत्र में जन्मतिथि एक जनवरी 1991 दर्ज है, जबकि आधार कार्ड और पैन कार्ड में एक जनवरी 1985 अंकित होने का दावा किया गया है। शिकायतकर्ता ने सवाल उठाया है कि जन्म प्रमाणपत्र उपलब्ध न होने की स्थिति में जांच अधिकारी ने शैक्षिक प्रमाणपत्र में दर्ज जन्मतिथि को किस आधार पर मान्य माना।

शिकायतकर्ता के अनुसार, जांच रिपोर्ट में बीपीएल प्रमाणपत्र नियुक्ति के समय मूल रूप में जमा किया जाना बताया गया है, जबकि संबंधित अभिलेख पर 31 मई 2016 की तारीख दर्ज है। वहीं, शिकायत में संबंधित महिला की नियुक्ति/योगदान आख्या सात जुलाई 2013 की होने की बात कही गई है। शिकायतकर्ता ने दोनों तारीखों के बीच करीब तीन वर्ष के अंतर को जांच का महत्वपूर्ण बिंदु बताते हुए दोबारा जांच की मांग की है। शिकायत में पहचान पत्र से जुड़े तथ्यों पर भी सवाल उठाए गए हैं।

शिकायतकर्ता का कहना है कि जांच अधिकारी द्वारा स्वीकार की गई जन्मतिथि 1 जनवरी 1991 मानने पर 1 जनवरी 2006 को संबंधित महिला की उम्र 15 वर्ष बनती है, जबकि पहचान पत्र में उस समय उम्र 22 वर्ष दर्शाए जाने का दावा किया गया है। शिकायतकर्ता ने इन तथ्यों के बीच कथित विसंगति की जांच कराने की मांग की है। कमला तिवारी ने 8 जुलाई 2013 के स्वघोषणा पत्र का भी उल्लेख किया है। उनका कहना है कि इसमें अभिलेखों में किसी प्रकार की त्रुटि पाए जाने पर नियुक्ति समाप्त किए जाने संबंधी शर्त दर्ज थी। उन्होंने आधार कार्ड में जन्मतिथि 1 जनवरी 1985 दर्ज होने का दावा करते हुए कहा कि शैक्षिक अभिलेख में दर्ज जन्मतिथि से अंतर भी जांच का विषय है। कमला तिवारी ने सीडीओ से संबंधित आंगनबाड़ी कार्यकर्ती के सभी मूल अभिलेखों की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। साथ ही, यदि जांच में दस्तावेजों में कूटरचना या गलत तथ्यों के आधार पर नियुक्ति की पुष्टि होती है तो नियमानुसार दंडात्मक कार्रवाई के साथ सरकारी धन की वसूली की प्रक्रिया अपनाने की मांग की है?

चीनी के बाद प्याज के दामों ने बढ़ाई लोगों की चिंता

रुड़की(आरएनएस)। महंगाई की मार से परेशान लोगों को प्याज भी महंगी कीमत पर खरीदनी पड़ रही है। पिछले कुछ दिनों में प्याज के दामों में अचानक तेजी आई है। बाजार में प्याज का भाव करीब 40 रुपये किलो से बढ़कर 60 रुपये किलो तक पहुंच गया है। इससे घरेलू बजट पर अतिरिक्त बोझ पड़ने लगा है। इससे पहले चीनी के दाम बढ़ने से लोगों की परेशानी बढ़ी थी और अब प्याज की कीमत में हुई बढ़ोतरी ने गृहणियों की चिंता और बढ़ा दी है। शहर की सब्जी मंडी और आसपास की दुकानों पर प्याज 50 से 60 रुपये किलो तक बिक रही हैदुकानदारों का कहना है कि थोक मंडी में प्याज की आवक और कीमतों में बदलाव के कारण खुदरा बाजार में भी दाम बढ़े हैं। आने वाले दिनों में यदि थोक कीमतों में कमी नहीं आई तो प्याज के दाम और बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। गृहणी सुनीता देवी ने बताया कि रसोई में प्याज का इस्तेमाल लगभग रोजाना होता है। ऐसे में 20 रुपये किलो की बढ़ोतरी भी महीने के बजट पर सीधा असर डालती है।

बदरीनाथ की सीमा से बाहर किए जाएं सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट

चमोली(आरएनएस)। बदरीश संयुक्त संघर्ष समिति ने बदरीनाथ धाम में बामणी गांव, अलकनंदा व ऋषिगंगा नदी के संगम पर बने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को हटाकर धाम की सीमा से बाहर बनाने की मांग की है। साथ ही धाम में भवनों की ऊंचाई के मानकों को अन्य नगरों की भांति करने की मांग रखी है। बदरीनाथ धाम में चल रहे मास्टर प्लान के कार्यों से उत्पन्न समस्याओं को लेकर बदरीश संयुक्त संघर्ष समिति की बैठक हुई। इसमें धाम में बने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांटों को हटाने की मांग पुरजोर तरीके से उठाई गई। समिति के सदस्यों ने कहा कि बदरीनाथ धाम जैसे स्थान पर सीवर ट्रीटमेंट प्लांट संगम पर बना है। इससे स्थानीय लोगों व श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत हो रही हैं। इसलिए इन प्लांटों को धाम की सीमा से बाहर बनाया जाए। उन्होंने कहा कि बदरीनाथ में सरकारी भवनों की ऊंचाई 9.5 मीटर और निजी भवनों की ऊंचाई में 6.5 मीटर के मानक तय किए गए हैं जबकि बदरीनाथ को छोड़कर अन्य नगरों में यह मानक 15 मीटर का है। धाम में भी भवनों को 15 मीटर तक बनाने की अनुमति दी जाए।

गढ़वाल राइफल्स ने युवाओं को दिया नशामुक्ति का संदेश

कोटद्वार(आरएनएस)। गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर ने युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से जागरूक करने और उन्हें उच्च शिक्षा से जोड़ने के लिए सजग इंडिया अभियान शुरू किया है। इस पहल के तहत मिशन एजुकेशन सुपर 300 का आयोजन किया गया। इसके लिए सीआईएमएस एवं यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज देहरादून के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। कमांडेंट ब्रिगेडियर विनोद सिंह नेगी ने कहा कि गढ़वाल राइफल्स अपने आश्रितों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करने का प्रयास करेगी। कार्यक्रम में गढ़वाल राइफल्स की परिवार कल्याण संगठन की अध्यक्षा रेखा नेगी और राज्य मानसिक स्वास्थ्य प्राधिकरण, उत्तराखंड के सदस्य और सीआईएमएस व यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज के अध्यक्ष अधिवक्ता ललित जोशी की टीम मौजूद रही। कमांडेंट ब्रिगेडियर विनोद सिंह नेगी ने उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान किया।

खनिज फाउंडेशन निधि के खर्चों के मूल अभिलेखों के सत्यापन की मांग

बागेश्वर(आरएनएस)। जिला खनिज फाउंडेशन न्यास की निधि से किए गए विभिन्न खर्चों के मूल वैधानिक अभिलेखों के सत्यापन की मांग उठी है।

जिलाधिकारी को सौंपे गए 223 पृष्ठ के प्रत्यावेदन में नियमावली के तहत तैयार प्रस्ताव, वार्षिक कार्ययोजना, बजट और लेखा-परीक्षा अभिलेखों की स्थिति स्पष्ट करने की मांग की गई है। प्रत्यावेदन में कहा गया है कि किसी खर्च को केवल कार्य के नाम के आधार पर अनुचित नहीं बताया जा रहा, बल्कि यह सत्यापित किया जाना जरूरी है कि खर्च से पहले निर्धारित वैधानिक प्रक्रिया का पालन हुआ था या नहीं।

अधिवक्ता बसंत कुमार ने कहा कि नियम 5(2) के तहत खनन से प्रभावित लोगों और क्षेत्रों की जरूरतों के संबंध में संबंधित विभागों से परामर्श के बाद प्रस्ताव तैयार किए जाने हैं। इसके बाद न्यास की बैठक में प्रस्तावों का परीक्षण कर स्वीकृति, संशोधन या अस्वीकृति की व्यवस्था है। ऐसे में प्रत्येक खर्च के पीछे प्रस्ताव से लेकर स्वीकृति और भुगतान तक की पूरी अभिलेखीय प्रक्रिया का सत्यापन किया जाना चाहिए। प्रत्यावेदन में उपलब्ध अभिलेखों के हवाले से करीब 31.52 लाख रुपये जिलाधिकारी कार्यालय और बैठक कक्ष की साज-सज्जा, नवीनीकरण व जलरोधक कार्यों पर खर्च किए जाने का उल्लेख किया गया है। इसके अलावा करीब 89.34 लाख रुपये के विभिन्न कार्यों और पुलिस परिसर की सुरक्षा दीवार से संबंधित खर्चों का भी मूल अभिलेखों के आधार पर परीक्षण कराने की मांग की गई है। यह स्पष्ट करने को कहा गया है कि इन कार्यों का खनन प्रभावित क्षेत्रों और लोगों की जरूरतों से क्या संबंध था तथा इन्हें किस वार्षिक कार्ययोजना और बजट के तहत मंजूरी मिली। प्रत्यावेदन में सात दिन के भीतर कारणयुक्त निर्णय लेते हुए कार्रवाई से लिखित रूप से अवगत कराने की मांग की गई है। मांग पूरी न होने पर लोकतांत्रिक तरीके से जन-आंदोलन की चेतावनी दी गई है।

गुलदार के रेस्क्यू के दौरान दो वन कर्मी हुए घायल

हमारे संवाददाता

पौड़ी। जिले के मासो तल्ला गांव में गुलदार के रेस्क्यू अभियान के दौरान दो वन कर्मी घायल हो गए। वन विभाग की टीम ने गुलदार को ट्रेंकुलाइज कर सुरक्षित पकड़ने का प्रयास किया लेकिन रेस्क्यू में देरी होने के चलते गुलदार दोबारा होश में आ गया और उसने मौके पर मौजूद वन कर्मियों पर हमला कर दिया।

जानकारी के अनुसार आज सुबह करीब 5 बजे एक गुलदार यहां रहने वाले अर्जुन सिंह के मुर्गीबाड़े में घुस गया और जाली के रास्ते होते हुए गुलदार एक कमरे में पहुंच गया और अंदर बंद हो गया। ग्रामीणों से सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और गुलदार को सुरक्षित रेस्क्यू करने की कार्रवाई शुरू कर दी। डीएफओ के अनुसार गुलदार की उम्र करीब एक वर्ष आंकी गयी है। रेस्क्यू टीम ने गुलदार को ट्रेंकुलाइज कर उसे पिंजरे में सुरक्षित कैद करने का प्रयास किया इसी दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी भी मौके पर पहुंच गए। उन्होंने बताया कि ट्रायंगुलेशन के बाद दवा का प्रभाव एक निर्धारित अवधि तक ही रहता है। रेस्क्यू की प्रक्रिया में देरी होने के दौरान गुलदार दोबारा होश में आ गया और इसके बाद उसने रेस्क्यू अभियान में जुटे दो वन कर्मियों पर हमला कर दिया हमले में दोनों वनकर्मी घायल हो गए। घटना के बाद घायल वन कर्मियों को तत्काल अस्पताल भेजा गया। इधर गुलदार के दोबारा सक्रिय होने के बाद वन विभाग नें अतिरिक्त टीम को मौके पर बुलाया है दूसरी रेस्क्यू टीम भी पहुंच गई है और गुलदार को सुरक्षित रूप से दोबारा ट्रेंकुलाइज करने की कार्रवाई जारी है।

बरसात नहीं झेल सके 90 लाख के निर्माणाधीन पैदल पुल के पिलर

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। यमुनोत्री धाम की यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से गरुड़ गंगा पर करीब 90 लाख रुपये की लागत से निर्माणाधीन लोहे के गाडर के पैदल पुल के पिलर बरसात में क्षतिग्रस्त हो गए हैं। पुल का निर्माण अभी पूरा भी नहीं हुआ है और उससे पहले ही दोनों ओर बनाए गए पिलरों को नुकसान पहुंचने से निर्माण कार्य की गुणवत्ता, मानकों और भूमि चयन को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। गरुड़ गंगा पर बनाया जा रहा यह पैदल पुल यमुनोत्री धाम और नवनिर्मित हेलिपैड को जोड़ने के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। क्षेत्र में करीब 60 लाख रुपये की लागत से हेलिपैड का निर्माण किया गया है, जबकि गरुड़ गंगा से यमुनोत्री मंदिर तक करीब 35 लाख रुपये की लागत से पैदल मार्ग का निर्माण भी किया जा रहा है। ऐसे में पुल के निर्माण से यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाने की योजना है। लेकिन निर्माणाधीन पुल के पिलर क्षतिग्रस्त होने से पूरी परियोजना की गुणवत्ता पर सवाल उठने लगे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि निर्माण के दौरान ही यदि पुल के पिलर पानी के दबाव को नहीं झेल पा रहे हैं तो भविष्य में यात्रियों के आवागमन के दौरान इसकी सुरक्षा और मजबूती को लेकर चिंता होना स्वाभाविक है। स्थानीय लोगों और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, पिलर की नींव को पर्याप्त गहराई तक खोदने के बजाय हल्की खुदाई कर पत्थरों के ऊपर ही निर्माण किए जाने की बात सामने आ रही है।

45 मिनट की 'खामोशी' पर सवाल..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

है कि हिमालयी देशों के बीच रियल टाइम डेटा साझा करना बेहद जरूरी हो जाता है। जलस्तर, ग्लेशियर, भूस्खलन और अचानक आने वाले जलप्रवाह की सूचना यदि सीमा पार समय रहते पहुंच जाए तो प्रशासन को कम से कम लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजने का मौका मिल सकता है। नेपाल की त्रासदी ने इसी जरूरत को और उजागर कर दिया है।

आज नेपाल पूछ रहा हैकृ45 मिनट की खामोशी क्यों रही? कल यही सवाल भारत, भूटान या हिमालय के किसी दूसरे हिस्से से भी पूछा जा सकता है। क्योंकि जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के दौर में हिमालयी आपदाओं का जोखिम गंभीर होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में पड़ोसी देशों के बीच आपदा-सूचना राजनीतिक विश्वास से ऊपर मानवीय जिम्मेदारी का विषय होनी चाहिए। बाढ़ पानी लेकर आई थी। लेकिन अपने पीछे उसने एक बड़ा सवाल छोड़ दिया है कि अगर खतरा सीमा पार पैदा हो चुका था, तो चेतावनी सीमा पार पहुंचने में 45 मिनट क्यों लगी? इन 45 मिनटों का पूरा सच सामने आना जरूरी है। क्योंकि आपदा में कभी-कभी कुछ मिनट भी सिर्फ समय नहीं होते वह जिंदगी और मौत के बीच का अंतर हो सकते हैं।

उत्तराखंड में रक्षाबंधन पर चुनावी 'प्रेम'..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

चुनाव भी होगा। यहां बेरोजगारी है, पलायन है, आपदा है, सड़कें हैं, शिक्षा और स्वास्थ्य के सवाल हैं। युवाओं की बेचैनी है। गांवों के खाली होते घर हैं। पहाड़ और मैदान के बीच विकास के सवाल हैं। इन सवालों के बीच अगर राजनीति सिर्फ राखी बांधने और फोटो खिंचवाने तक सीमित रह गई तो लोकतंत्र का त्योहार जरूर मनेगा, लेकिन जनता के सवाल फिर पीछे छूट जाएंगे।

राखी बांधिए, जरूर बांधिए। बहनों का सम्मान कीजिए। उनके बीच जाइए। लेकिन राखी के साथ जिम्मेदारी भी बांधिए। कलाई पर बंधी राखी अगर नेता को यह याद दिलाए कि बहन के गांव में पानी पहुंचाना है, उसके बच्चों को रोजगार देना है, उसकी सड़क ठीक करनी है और उसके परिवार को सुरक्षित भविष्य देना है, तभी इस रिश्ते का अर्थ है। वरना यह सिर्फ एक और चुनावी फोटो होगी और उत्तराखंड की जनता अब फोटो नहीं, हिसाब देखना चाहती है। इसलिए चुनाव से पहले सबसे ज्यादा राखी बंधवाने वाले नेता को यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि वही सबसे मजबूत है। असली ताकत उस दिन पता चलेगी, जब मतदाता की उंगली ईवीएम के बटन तक पहुंचेगी। कलाई पर राखी होगी। सामने उम्मीदवार होगा और बीच में पांच साल का हिसाब।

पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल समेत कई कांग्रेसी पुलिस हिरासत में

◆सीएम को देने जा रहे थे ज्ञापन

हमारे संवाददाता

उधमसिंहनगर। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के जिला मुख्यालय दौरे के दौरान रुद्रपुर में सियासी माहौल उस वक्त गरमा गया, जब जिला अस्पताल और मेडिकल कॉलेज की बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को लेकर ज्ञापन सौंपने जा रहे पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल सहित कई कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं को पुलिस ने सिटी क्लब के पास हिरासत में ले लिया।

पूर्व विधायक ठुकराल अपने समर्थकों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ मुख्यमंत्री से मुलाकात कर स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति से उन्हें अवगत कराने की तैयारी में थे। इसी दौरान मौके पर पहुंचे भारी पुलिस बल ने उन्हें घेर लिया और ठुकराल समेत कांग्रेस प्रदेश सचिव दिनेश पंत, जिला पंचायत सदस्य सुखदेव हालदार, दिनेश कोली, राम सेवक कोली, आनंद शर्मा और सुनील चुघ समेत कई कार्यकर्ताओं को पुलिस वाहन से ले जाया गया।

पुलिस कार्रवाई के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने सरकार और प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और कार्रवाई को लोकतांत्रिक आवाज दबाने का प्रयास बताया।

पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने कहा कि वे मुख्यमंत्री का विरोध करने नहीं, बल्कि जिला अस्पताल की गंभीर समस्याओं का मुद्दा उठाने और जनता की आवाज मुख्यमंत्री तक पहुंचाने जा रहे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि जिला अस्पताल लंबे समय से गंभीर अव्यवस्थाओं से जूझ रहा है और मरीजों को बेहतर इलाज के बजाय रेफर किए जाने की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। ठुकराल ने चिकित्सकों की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली को लेकर सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि समय पर उपचार न मिलने से मरीजों और उनके परिवारों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। साथ ही मेडिकल कॉलेज में कक्षाएं शुरू न होने को लेकर भी उन्होंने सरकार से सवाल किए।

ठुकराल ने कहा कि कांग्रेस जनता से जुड़े मुद्दों पर पीछे नहीं हटेगी और लोकतांत्रिक तरीके से स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए संघर्ष जारी रहेगा।

ज्वैलर्स की दुकान में चोरी का खुलासा, एक गिरफ्तार

संवाददाता

उत्तरकाशी। पुलिस ने ज्वैलर्स की दुकान में हुई चोरी का खुलासा करते हुए एक को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चोरी के जेवरात बरामद कर लिये। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

मिली जानकारी के अनुसार 25 अगस्त 2026 की रात्रि मोरी क्षेत्र के नेटवाड़ स्थित एक ज्वैलर्स की दुकान का ताला तोड़कर सोने एवं चांदी के आभूषण चोरी किए जाने की सूचना पर मोरी पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए चोरी का सफल खुलासा कर एक को गिरफ्तार किया गया।

ज्वैलर्स दुकान स्वामी द्वारा थाना मोरी में लिखित तहरीर देकर अज्ञात व्यक्ति के विरुद्ध दुकान का ताला तोड़कर सोने-चांदी के आभूषण चोरी किए जाने की शिकायत दर्ज कराई गई। तहरीर के आधार पर थाना मोरी में मुकदमा दर्ज किया गया। प्रकरण के संज्ञान में आते ही पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय द्वारा चोरी की घटना का शीघ्र खुलासा एवं गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। घटना के अनावरण के लिए थानाध्यक्ष मोरी के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित की गई। पुलिस उपाधीक्षक बड़कोट, चंचल शर्मा के निकट पर्यवेक्षण एवं थानाध्यक्ष मोरी, दीपक रावत के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा सीसीटीवी फुटेज खंगालने के साथ-साथ मैनुअल पुलिसिंग के माध्यम से संदिग्ध की जानकारी जुटाई गई। त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई के परिणामस्वरूप मात्र 4 घंटे के भीतर घटना का सफल अनावरण करते हुए गत सांय छिबाड़ा खड्ड, नेटवाड़ से चोरी की घटना को अंजाम देने वाले प्रवेश उनियाल को गिरफ्तार किया गया। उसके कब्जे से चोरी किए गए सोने एवं चांदी के आभूषण बरामद किए गए हैं। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिला कांग्रेस का प्रतिनिधि मंडल

संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस के प्रतिनिधि मंडल ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिलकर उत्तराखण्ड में चल रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान उत्पन्न गंभीर चिंताओं की ओर ध्यान दिलाया।

आज यहां सूर्यकांत धस्माना सदस्य, एआईसीसी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिले और उनका ध्यान उत्तराखंड में चल रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान उत्पन्न गंभीर चिंताओं की ओर दिलाना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि मोहम्मद अलीम पुत्र अंसार अहमद और उनकी पत्नी खशीन फारूकी देहरादून के स्थायी निवासी हैं। वे पहले लेन नं. 26, मकान नं. 5, टर्नर रोड, देहरादून में रहते थे और अब उसी क्षेत्र में लेन नं. 24, बीएसएनएल टावर के पास शिफ्ट हुए हैं। विधानसभा क्षेत्र वही है। उनके नाम 2003 की मतदाता सूची में दर्ज हैं, जो उनके ऐतिहासिक संबंध का प्रमाण है। मोहम्मद अलीम हिमालयन वेलनेस कंपनी के डॉ. एस. फारूक के चचेरे भाई हैं और उनकी पत्नी प्रसिद्ध हकीम रफत हुसैन फारूकी की पोती हैं, जो विभाजन-पूर्व से देहरादून के वरिष्ठ कांग्रेस नेता रहे हैं। इतने दस्तावेजों के बावजूद एसआईआर के तहत उनके मतदाता सूची में नाम शामिल करने के आवेदन बार-बार खारिज किए जा रहे हैं। मुस्लिम मतदाताओं के खिलाफ थोक में आपत्तियों का मामला एक जांच रिपोर्ट के अनुसार 5 विधानसभा क्षेत्रों में सिर्फ 5 व्यक्तियों ने लगभग 6,500 आपत्तियां दाखिल की हैं और रिपोर्ट के अनुसार इनके द्वारा लक्षित सभी मतदाता मुस्लिम हैं। प्रमुख मांगें हैं कि मोहम्मद अलीम और खशीन फारूकी के मामलों की व्यक्तिगत रूप से नए सिरे से और पारदर्शी जांच कर उनके दस्तावेजों और 2003 की सूची का सत्यापन किया जाए। उन्हें अस्वीकृति का लिखित कारण बताया जाए और कमी होने पर उसे दूर करने का अवसर दिया जाए। किच्छा, गदरपुर, खटीमा, नानकमत्ता और रुद्रपुर में दाखिल थोक आपत्तियों की स्वतंत्र जांच हो। यह सुनिश्चित किया जाए कि बिना स्वतंत्र सत्यापन, बिना फील्ड रिपोर्ट और बिना संबंधित मतदाता को नोटिस व सुनवाई का अवसर दिए किसी भी मतदाता का नाम न काटा जाए। यह जांच की जाए कि क्या मुस्लिम मतदाताओं को सुनियोजित तरीके से निशाना बनाया जा रहा है।

एसआईआर 2026 में फार्म 7 के दुरूपयोग की शिकायत

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने 6 जिलों के डीएम को दिये कार्यवाही के आदेश

हमारे संवाददाता

देहरादून/काशीपुर। उत्तराखंड के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय द्वारा फार्म 7 के दुरूपयोग करके मिथ्या फर्जी व बेनामी आपत्तियां लगाने की सूचना अधिकार व मानवाधिकार कार्यकर्ता नदीम उद्दीन एडवोकेट द्वारा की गयी शिकायत व सुझाव को संज्ञान में लेकर इसका परीक्षण कर प्रभावी कार्यवाही को 6 जिलों के जिलाधिकारियों एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देशित किया है। इसके साथ नदीम द्वारा भेजी शिकायत व सुझाव सम्बन्धी पत्र की प्रति भी संलग्न की गयी है।

काशीपुर निवासी सूचना अधिकार व मानवाधिकार कार्यकर्ता, समाज सेवी तथा 45 कानूनी पुस्तकों के लेखक नदीम उद्दीन (एडवोकेट) ने एस.आइ.आर.2026 में फार्म 7 का दुरूपयोग करके गलत मिथ्या फर्जी व बेनामी आपत्तियां की प्रवृत्ति व घटनाओं को रोकने के लिये शिकायत व सुझाव मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तराखंड को भेजकर इस पर प्रभावी कार्यवाही का अनुरोध किया था।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय उत्तराखंड के उपमुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तराखंड किशन सिंह नेगी ने उत्तराखंड में अधिक संख्या में आपत्तियां वाले 6 जिलों के जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों को संबोधित पत्र संख्या 1416 दिनांक 20 अगस्त 2026 भेजकर श्री नदीम के पत्र में उल्लिखित बिन्दुओं का परीक्षण कर सम्बन्धित निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को दावे/आपत्तियों की प्राप्ति एवं निस्तारण के कार्य में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950, निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण नियम 1960 तथा मैनुअल ऑफ इलैक्टोरल रोल्स 2023 के अन्तर्गत निर्धारित प्रक्रिया तथा आयोग द्वारा तद विषयक समय-समय पर जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन करने हेतु निर्देशित करने का निर्देश दिया गया है।

इस पत्र की प्रति श्री नदीम को भी प्रेषित की गयी है। जिन जिलों के जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों को उक्त पत्र भेजा गया है उसमें हरिद्वार, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, चम्पावत, नैनीताल तथा उधमसिंह नगर शामिल है। नदीम ने उनके पत्र का संज्ञान लेकर कार्यवाही को निर्देशित करने के लिये मुख्य निर्वाचन अधिकारी वी.वी.आर. पुरूषोत्तम तथा उप मुख्य निर्वाचन अधिकारी किशन सिंह नेगी व अन्य सम्बन्धित अधिकारियों का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया हैं तथा आशा व्यक्त की हैं जिलो के सम्बन्धित अधिकारी उस पर कार्यवाही करके सभी पात्र नागरिकों के मताधिकार के संवैधानिक अधिकार का संरक्षण सुनिश्चित करेंगे।

नदीम ने दिनांक 18 अगस्त 2026 को प्रेषित शिकायत व सुझाव में आपत्तिकर्ता से पुष्टि न होने वाली आपत्तियां निरस्त करने, पुष्टि वाली आपत्तियों की जांच में आपत्तिकर्ता से साक्ष्य मांगकर तथा जिस पर आपत्ति लगायी गयी है, उसे अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर देकर निर्णय लेने तथा फर्जी तथा बेनामी आपत्तियां लगाने वालों के विरूद्ध फौजदारी मुकदमें दर्ज कराने सहित प्रभावी कार्यवाही का अनुरोध किया है।

मां की हत्या का आरोपी बेटा गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

टिहरी। मां की हत्या कर फरार हुए बेटे को पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद आखिरकार गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी हत्या के बाद से घने जंगलों में ठिकाने बदलकर छुप रहा था।

जानकारी के अनुसार ग्राम कोटी खास जाखंणीधार निवासी बुग्गा देवी पत्नी स्वर्गीय गुलाब सिंह की उनके पुत्र अजय सजवाण ने हत्या कर दी थी, इसके बाद वह फरार हो गया था। मामले में थाना नई टिहरी पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी।

इस दौरान पुलिस को पता चला कि आरोपी गिरफ्तारी से बचने के लिए जाखणी धार क्षेत्र के घने जंगलों में छुपा हुआ है साथ ही वह पुलिस से बचने के लिए लगातार अपना ठिकाना बदल रहा है। इस पर पुलिस ने जंगल में कम्बिंग अभियान तेज कर दिया। लगातार कई स्थानों पर खोज बीन और निगरानी के बाद पुलिस को सफलता मिली और पुलिस ने बीती शाम आरोपी अजय सजवाण को जंगल क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया जिसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

तीन करोड़ की साइबर ठगी का फरार आरोपी गिरफ्तार

देहरादून (सं)। 3.20 करोड़ रूपये की साइबर ठगी मामले में फरार चल रहे आरोपी को एसटीएफ की साइबर टीम ने कोलकाता से गिरफ्तार कर लिया है। जिसके कब्जे से 2 मोबाइल, 4 सिम व एक लैपटाप बरामद किया गया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसटीएफ अजय सिंह ने बताया कि साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन, देहरादून में 3.20 करोड़ रूपये की साइबर ठगी के संबंध में मुकदमा दर्ज किया गया था। जांच में प्रकाश में आया कि साइबर अपराधियों द्वारा स्वयं को कंपनी के उच्चाधिकारी/मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में प्रस्तुत कर कंपनी के जनरल मैनेजर से व्हाट्सअप के माध्यम से संपर्क किया गया। इसके बाद प्रोजेक्ट के एडवांस पेमेंट एवं अन्य आवश्यक भुगतानों के नाम पर कंपनी के जनरल मैनेजर को विश्वास में लेकर विभिन्न बैंक खातों में धनराशि ट्रांसफर कराई गई। इसी क्रम में श्याम ट्रेडिंग कम्पनी के बैंक खाते में भी धनराशि ट्रांसफर कराई गई। इस प्रकार फर्जी पहचान एवं डिजिटल माध्यम का प्रयोग कर लगभग 3.20 करोड़ की साइबर ठगी की गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसटीएफ द्वारा साइबर क्राइम पुलिस टीम को तकनीकी विश्लेषण कर मैनुअल इनपुट विकसित करने के निर्देश दिए गए थे। महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होने पर पुलिस टीम द्वारा कोलकाता पहुंचकर आरोपी की तलाश की गई तथा उसे उसके निवास से गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गई। गिरफ्तार किये गये साइबर ठग का नाम चन्द्र कांत मिश्रा निवासी ग्रीन फील्ड सिटी, महेशतल्ला, कोलकाता, पश्चिम बंगाल बताया जा रहा है।

यूपी में हरियाणा के सिंगर अंकित बालियान की हत्या!

हमारे संवाददाता

मुजफ्फरनगर। शामली में बीती शाम यूट्यूबर और हरियाणवी सिंगर अंकित बालियान की गोली मारकर हत्या कर दी गई। अंकित को हमलावरों ने उस समय गोली मारी, जब वह जिम से निकल रहे थे।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अंकित बालियान बीती शाम शामली के आर्यपुरी नाला पटरी इलाके में जिम गए थे। करीब शाम 7 बजे जिम से बाहर निकलकर वह अपनी गाड़ी की तरफ बढ़े। इसी दौरान पहले से घात लगाए हमलावरों ने उन पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस घटना से स्थानीय लोगों में गुस्सा है। अंकित के परिवार और स्थानीय लोगों शव को रखकर सड़क पर धरना दे रहे हैं।

बताया जा रहा है कि अंकित बालियान हरियाणवी म्यूजिक इंडस्ट्री के सिंगर, राइटर और सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर थे। उनकी उम्र करीब 35 साल थी। उनका संबंध उत्तर प्रदेश के शामली जिले के बंतीखेड़ा गांव से बताया जाता है। उनका काम मुख्य रूप से हरियाणवी म्यूजिक इंडस्ट्री में था। अंकित बालियान ने साविधान, हरिद्वार हरियाणा का, बेबी बादशाह, ग्रेनर, राम का नाम, बॉडी बिल्डिर, जाट जाटनी, गोली के बारूद, यूपी-हरियाणा और जाट धर्मेंदर की दरिया नाम से गाने गाए हैं।

अंकित बालियान ने मासूम शर्मा, राहुल पुठी, आशु ट्विंकल, रानू पंजाबी, नॉनू राणा समेत कई हरियाणवी कलाकारों के साथ भी प्रोजेक्ट किए थे। अभी हत्या की वजह सामने नहीं आई है. पुलिस हमलावरों की पहचान और हत्या के पीछे की वजह पता करने के लिए सीसीटीवी फुटेज और अन्य सबूतों की जांच कर रही है। शामली के सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस एनपी सिंह ने कहा,थाना कोतवाली शामली क्षेत्रान्तर्गत डायल 112 के माध्यम से सूचना प्राप्त हुई कि अंकित बालियान निवासी बंतीखेड़ा को जिम से निकलते समय 3-4 अज्ञात व्यक्तियों ने गोली मार दी। इससे अंकित की मौके पर ही मौत हो गई।

स्वाइन फ्लू की दस्तक ने स्वास्थ्य विभाग की चिंता बढ़ा दी!

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में बदलते मौसम के बीच स्वाइन फ्लू की दस्तक ने स्वास्थ्य विभाग की चिंता बढ़ा दी है। बारिश के बाद तापमान में उतार-चढ़ाव और वायरल संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच स्वास्थ्य महकमा सतर्कता बरतने की तैयारी में जुट गया है। हालांकि स्वाइन फ्लू को लेकर घबराने के बजाय सावधानी और समय पर चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है। स्वाइन फ्लू को आमतौर पर इन्फ्लुएंजा-ए संक्रमण के रूप में जाना जाता है। इसके लक्षण सामान्य फ्लू जैसे हो सकते हैं बुखार, खांसी, गले में खराश, नाक बहना, शरीर में दर्द और कमजोरी। कुछ लोगों में संक्रमण गंभीर रूप भी ले सकता है, खासकर यदि उन्हें पहले से कोई स्वास्थ्य समस्या हो।

◆बुखार, खांसी, गले में खराश, नाक बहना और बदन दर्द इसके मुख्य लक्षण
◆दून समेत मैदानी व पर्वतीय क्षेत्रों के अस्पतालों में सांस और वायरल के मरीज बढ़े

उत्तराखंड में मानसून के दौरान लगातार बारिश और तापमान में बदलाव के कारण श्वसन संबंधी संक्रमणों का खतरा बढ़ सकता है। अस्पतालों की ओपीडी में वायरल और सांस से जुड़ी शिकायतों वाले मरीजों की संख्या बढ़ने पर स्वास्थ्य विभाग के सामने संक्रमण की निगरानी की चुनौती भी बढ़ जाती है। देहरादून सहित मैदानी और पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य संस्थानों को संदिग्ध मरीजों पर नजर रखने, आवश्यक जांच और उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित करने की जरूरत है। अस्पतालों में संक्रमण नियंत्रण की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण होगी।

स्वाइन फ्लू के लक्षण शुरुआत में सामान्य वायरल बुखार जैसे लग सकते हैं। यही कारण है कि कई बार लोग इसे सामान्य सर्दी-जुकाम समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लगातार या तेज बुखार, सांस लेने में परेशानी, अत्यधिक कमजोरी अथवा हालत बिगड़ने पर चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है। बीमारी की पुष्टि केवल लक्षणों के आधार पर नहीं की जाती। जरूरत पड़ने पर डाक्टर जांच की सलाह दे सकते हैं और उसी के आधार पर उपचार तय होता है।

स्वास्थ्य विभाग के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि संक्रमण की रोकथाम के साथ लोगों में अनावश्यक भय भी न फैले। स्वाइन फ्लू का नाम सुनते ही घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन लापरवाही भी उचित नहीं। हर बार किसी संक्रामक बीमारी की दस्तक स्वास्थ्य व्यवस्था की तैयारियों की परीक्षा भी होती है। अस्पतालों में आवश्यक दवाओं, जांच की सुविधा, प्रशिक्षित स्टाफ और संक्रमण नियंत्रण व्यवस्था को मजबूत रखना जरूरी है। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में चुनौती इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि दूरदराज के क्षेत्रों में विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच आसान नहीं है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, एडवोकेट
बैजनाथ, एडवोकेट

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।